वर्ष-1 , अंक-11 | बेंगलुरु, सोमवार , 31 अगस्त 2026 | RNI NO:KNHIN/26/A5540 | Contact:news@bhaarataarth.com | पृष्ठ - 4 ,मूल्य - 5 रुपए

दैनिक समाचार पत्र

भारतार्थ खबर

ख़बर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

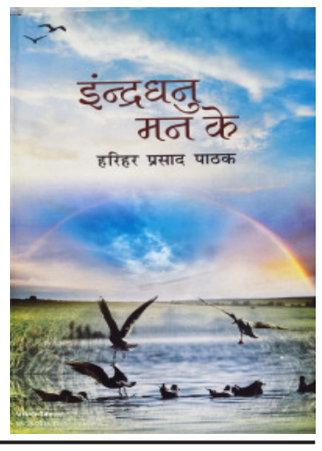

मन की बात में मोदी का नशामुक्त युवा पर जोर

महिला उद्यमिता, स्वच्छता, विज्ञान, खेती और वोकल फॉर लोकल का भी संदेश

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 30 अगस्त 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात के 137वें संस्करण में देशवासियों से सामाजिक बदलाव में सक्रिय भागीदारी निभाने का आान किया। प्रधानमंत्री ने नशामुक्त युवा, महिला उद्यमिता, स्वच्छता, विज्ञान एवं अंतरिक्ष, कृषि में विविधता, भारतीय इतिहास और स्वदेशी उत्पादों सहित विभिन्न विषयों पर अपने विचार साझा किए। नशामुक्त युवा अभियान पर जोर प्रधानमंत्री ने नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत अभियान का उल्लेख करते हुए युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए जनभागीदारी बढ़ाने की अपील की। उन्होंने युवाओं, विद्यार्थियों, कलाकारों और सामग्री निमार्ताओं से नशामुक्ति का संदेश विभिन्न माध्यमों और भाषाओं में लोगों तक पहुंचाने का आग्रह किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि नशे की समस्या का प्रभाव केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवार और समाज भी इससे प्रभावित होते हैं। उन्होंने नशे के खिलाफ जागरूकता फैलाने और इससे जूझ रहे लोगों की मदद करने वालों के प्रयासों की सराहना की। महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन मन की बात में प्रधानमंत्री ने छोटे कारोबार से जुड़ी महिलाओं के प्रयासों का उल्लेख किया। उन्होंने आर्थिक अवसरों और सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में हो रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने विभिन्न महिला लाभार्थियों के उदाहरण देते हुए बताया कि आर्थिक सहयोग मिलने से छोटे कारोबार को आगे बढ़ाने और परिवार की आय में योगदान देने के अवसर बढ़ सकते हैं। स्वच्छता में जनभागीदारी का संदेश प्रधानमंत्री ने स्थानीय स्तर पर स्वच्छता अभियान चलाने वाले युवाओं और नागरिकों के प्रयासों का उल्लेख किया। उन्होंने सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ रखने और प्लास्टिक कचरे को कम करने में सामूहिक भागीदारी की आवश्यकता बताई।

श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान स्वच्छता से जुड़े प्रयासों का भी उन्होंने उल्लेख किया और श्रद्धालुओं की भागीदारी को महत्वपूर्ण बताया।

बेटियों की विज्ञान और अंतरिक्ष में भागीदारी प्रधानमंत्री ने विज्ञान एवं अंतरिक्ष के क्षेत्र में छात्राओं की भागीदारी बढ़ाने वाली पहल Mission ShaktiSAT का उल्लेख किया। उन्होंने इसे बेटियों को विज्ञान, तकनीक और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों से जोड़ने वाली पहल के रूप में सामने रखा।

कृषि में नई फसलों से आय के अवसर

प्रधानमंत्री ने किसानों द्वारा पारंपरिक फसलों के साथ नई कृषि संभावनाएं तलाशने के उदाहरण भी साझा किए। उन्होंने आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक के कुछ किसानों द्वारा एवोकाडो की खेती अपनाए जाने का उल्लेख किया।

उन्होंने वैज्ञानिक सलाह, बाजार की जरूरतों की समझ और फसल विविधीकरण को किसानों की आय के नए अवसरों से जोड़ते हुए ऐसे प्रयोगों को प्रोत्साहित किया।

तकनीक से इतिहास को समझने की पहल

प्रधानमंत्री ने मुंबई के कृष्णा शेषाद्रि की ओर से तैयार की गई BharatRajya वेबसाइट का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि डिजिटल माध्यम के जरिए भारतीय इतिहास और विभिन्न कालखंडों में अलग-अलग क्षेत्रों पर शासन करने वाले राजवंशों को समझने की कोशिश की गई है।

हर घर तिरंगा और स्वदेशी उत्पादों का आान

प्रधानमंत्री ने देश में दिखाई देने वाली देशभक्ति की भावना का उल्लेख करते हुए हर घर तिरंगा अभियान की चर्चा की। साथ ही उन्होंने आगामी त्योहारों के दौरान भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता देने और वोकल फॉर लोकल की भावना को आगे बढ़ाने की अपील की।

सामाजिक भागीदारी को बताया बदलाव की ताकत 137वीं मन की बात का प्रमुख संदेश नागरिक भागीदारी और व्यक्तिगत प्रयासों को देश के व्यापक विकास से जोड़ने का रहा। प्रधानमंत्री ने विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे नागरिकों और समूहों के उदाहरणों के माध्यम से यह संदेश दिया कि सामाजिक बदलाव में सरकार के साथ आम नागरिकों की सक्रिय भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

मोदी को उज्बेकिस्तान का सर्वोच्च सम्मान, रिश्तों को नई उड़ान

यूरेनियम, डिजिटल तकनीक, एआई और GIFT City पर सहयोग; 2030 तक 5 अरब डॉलर व्यापार का लक्ष्य

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

ताशकंद, 30 अगस्त 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उज्बेकिस्तान की राजकीय यात्रा के दौरान भारत और उज्बेकिस्तान ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी (Comprehenfsive Strategic Partnership) के स्तर तक ले जाने का फैसला किया। प्रधानमंत्री मोदी और उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शावकत मिर्जियोयेव के बीच ताशकंद में हुई प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता में व्यापार, निवेश, ऊर्जा, यूरेनियम, डिजिटल तकनीक, एआई, रक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और अंतरिक्ष सहित कई क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी। इसी दौरान राष्ट्रपति मिर्जियोयेव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उज्बेकिस्तान के सर्वोच्च राजकीय सम्मान ओलीय दरजाली दोस्तलिक से सम्मानित किया। यह सम्मान दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने में प्रधानमंत्री मोदी के योगदान के लिए दिया गया। दीर्घकालिक यूरेनियम आपूर्ति पर सहमति भारत और उज्बेकिस्तान ने परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के साथ यूरेनियम की दीर्घकालिक आपूर्ति के लिए व्यवस्था स्थापित करने पर सहमति जताई। प्रधानमंत्री मोदी ने वार्ता के दौरान इस पहल की जानकारी दी। दोनों देशों के संयुक्त बयान में परमाणु ऊर्जा, खनन और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की प्रतिबद्धता भी दर्ज की गई है। एआई, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और वढकपर जोर वार्ता में सूचना प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और वढक को भी प्रमुखता दी गई। दोनों देशों ने डिजिटल परिवर्तन, आईटी, एआई, अंतरिक्ष और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग को व्यापक बनाने पर सहमति जताई।

भारत और उज्बेकिस्तान के बीच वढक से जुड़े वाणिज्यिक सहयोग की दिशा में भी कदम बढ़ाया गया है। इसके तहत भारतीय वढक ऐप के माध्यम से उज्बेकिस्तान में व्यापारियों को भुगतान की सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में समझौता हुआ है। GIFT City और न्यू ताशकंद पर सहयोग

शहरी विकास और आधुनिक बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में भारत के गुजरात स्थित GIFT City और उज्बेकिस्तान के न्यू ताशकंद विकास मॉडल पर भी चर्चा हुई। दोनों देशों ने शहरी विकास और आधुनिक शहरों से जुड़े अनुभवों को साझा करने की संभावनाओं पर जोर दिया। उज्बेकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल के भारत आकर ऐसे विकास मॉडलों का अध्ययन करने की संभावना भी सामने आई।

2030 तक 5 अरब डॉलर व्यापार का लक्ष्य दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार को वर्ष 2030 तक 5 अरब डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। व्यापार और निवेश के अलावा महत्वपूर्ण खनिज, खनन, रक्षा, स्वास्थ्य, फार्मास्यूटिकल्स, कृषि, शिक्षा और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर भी सहमति बनी।

विदेश मंत्री स्तर की समन्वय व्यवस्था व्यापक रणनीतिक साझेदारी को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने के लिए दोनों देशों ने विदेश मंत्री स्तर पर एक समन्वय तंत्र स्थापित करने पर सहमति जताई है। इसके माध्यम से द्विपक्षीय समझौतों और प्राथमिक परियोजनाओं की निगरानी एवं क्रियान्वयन को गति देने का प्रयास किया जाएगा। संयुक्त आयोग को भी उच्च स्तर पर ले जाने और कारोबारी सहयोग बढ़ाने के लिए बिजनेस समिट आयोजित करने की दिशा में सहमति बनी है।

शिक्षा, संस्कृति और बौद्ध विरासत पर भी सहयोग यात्रा के दौरान भारत और उज्बेकिस्तान ने संस्कृति, उच्च शिक्षा, शोध, पर्यटन और पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में कई समझौतों और पहलों को आगे बढ़ाया। उज्बेकिस्तान में प्राचीन बौद्ध स्थलों फयाज टेपा और कारा टेपा के संरक्षण एवं पुनरुद्धार के लिए भी सहयोग की दिशा में समझ बनी है। भारत ने अरल सागर क्षेत्र के पर्यावरणीय पुनर्वास के लिए 10 लाख अमेरिकी डॉलर के अनुदान की घोषणा भी की है। प्रधानमंत्री मोदी ने उज्बेकिस्तान की स्वतंत्रता की 35वीं वर्षगांठ पर राष्ट्रपति मिर्जियोयेव और वहां की जनता को शुभकामनाएं दीं। दोनों देशों के नेताओं ने भारत-उज्बेकिस्तान संबंधों को नए स्तर पर ले जाने और आने वाले वर्षों में ठोस लक्ष्यों के साथ सहयोग बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई।

नेपाल-तिब्बत में जलप्रलय, 750 से अधिक मौतें

3,000 से ज्यादा लापता; भारत ने राहत सामग्री और विशेषज्ञ सहायता भेजी

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 30 अगस्त 2026। नेपाल और चीन के तिब्बत क्षेत्र में भीषण बाढ़ और भूस्खलन ने व्यापक तबाही मचा दी है। हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियर से जुड़ी घटना के बाद अचानक आई बाढ़ और मलबे के तेज बहाव से बड़ी संख्या में लोगों की जान गई है। उपलब्ध ताजा रिपोर्टों के अनुसार नेपाल और तिब्बत में मृतकों की संख्या 750 से अधिक हो गई है, जबकि 3,000 से ज्यादा लोग अब भी लापता बताए जा रहे हैं।

बचाव अभियान में बड़ी चुनौती

प्रभावित क्षेत्रों में भारी मलबे, क्षतिग्रस्त सड़कों-पुलों और दुर्गम पहाड़ी भूभाग के कारण राहत एवं बचाव कार्य बेहद चुनौतीपूर्ण बने हुए हैं। नेपाल में हजारों सुरक्षाकर्मी और बचाव दल लापता लोगों की तलाश में जुटे हैं। अब तक हजारों लोगों को सुरक्षित निकाला जा चुका है, जबकि कई लोग जलविद्युत परियोजनाओं की सुरंगों में फंसे होने की आशंका है। नेपाल में 2,498 लोगों के लापता होने की सूचना है, जबकि चीन के अधिकारियों के अनुसार तिब्बत में 16 लोगों की मौत हुई है और 546 लोग लापता हैं। लापता लोगों में विदेशी नागरिक भी शामिल हैं।

भारत ने बढ़ाया मदद का हाथ

भीषण आपदा के बीच भारत ने नेपाल के लिए राहत और बचाव सहायता बढ़ाई है। भारत की ओर से राहत सामग्री की कई खेप नेपाल भेजी गई हैं। ताजा रिपोर्ट के अनुसार चौथी राहत उड़ान करीब 11 टन सामग्री लेकर काठमांडू पहुंची, जबकि भारत से अब तक लगभग 68.5 टन राहत सामग्री भेजे जाने की जानकारी है। भारत ने विशेषज्ञ और चिकित्सा सहायता भी उपलब्ध कराई है।

भारत की ओर से भेजी गई सहायता में प्रभावित लोगों के लिए आवश्यक राहत सामग्री के साथ बचाव कार्य में उपयोगी विशेषज्ञ सहयोग भी शामिल है। भारतीय टीमों ने नेपाल में कठिन इलाकों और सुरंगों में बचाव अभियान में सहयोग शुरू किया है।

फिर बाढ़ का खतरा

नेपाल के कुछ प्रभावित क्षेत्रों में नदी का जलस्तर बढ़ने के बाद प्रशासन ने नए बाढ़ अलर्ट जारी किए हैं। बचाव दलों को भी सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं। खराब मौसम और दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण हेलीकॉप्टर से राहत एवं बचाव अभियान भी कई बार प्रभावित हुआ है। प्रशासन की प्राथमिकता फिलहाल लापता लोगों की तलाश, फंसे लोगों को सुरक्षित निकालना, मृतकों की पहचान और प्रभावित परिवारों तक राहत पहुंचाना है। साथ ही संभावित नए बाढ़ और भूस्खलन के खतरे पर भी लगातार नजर रखी जा रही है।

हिमालयी क्षेत्र के लिए गंभीर चेतावनी

नेपाल-तिब्बत की यह त्रासदी हिमालयी क्षेत्रों में अचानक आने वाली बाढ़, भूस्खलन और ग्लेशियर से जुड़ी आपदाओं के बढ़ते जोखिम को सामने लाती है। विशेषज्ञों के अनुसार हिमालयी क्षेत्र में बदलती जलवायु परिस्थितियां ग्लेशियरों और पर्वतीय ढलानों की स्थिरता को प्रभावित कर रही हैं, जिससे भविष्य में ऐसी घटनाओं का खतरा बढ़ सकता है। फिलहाल राहत और बचाव अभियान जारी है तथा हजारों परिवार अपने लापता परिजनों की सुरक्षित वापसी की उम्मीद लगाए हुए हैं।

ताशकंद में गूंजा भारत का अपनापन

भारतीय समुदाय ने पीएम मोदी का गर्मजोशी से किया स्वागत, मोदी बोले—अभिभूत हूं

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

ताशकंद, 30 अगस्त 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उज्बेकिस्तान दौरे के दौरान राजधानी ताशकंद में भारतीय समुदाय ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। दो दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी से मिलने के लिए भारतीय समुदाय के लोग एक होटल में एकत्र हुए। इस दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ प्रधानमंत्री का स्वागत किया गया।

प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय समुदाय के इस आत्मीय स्वागत पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा कि वह ताशकंद में भारतीय समुदाय के स्नेह और गर्मजोशी से अभिभूत हैं। उन्होंने प्रवासी भारतीयों को भारत और उज्बेकिस्तान के बीच मित्रता को मजबूत करने वाला महत्वपूर्ण सेतु बताया।

सांस्कृतिक रंगों से सजा स्वागत समारोह

स्वागत कार्यक्रम में भारतीय समुदाय की ओर से कथक सहित विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। उज्बेकिस्तान के स्थानीय कलाकारों और बच्चों ने भी भारतीय गीतों पर प्रस्तुति देकर भारत के प्रति अपने लगाव का परिचय दिया। इससे कार्यक्रम में भारत और उज्बेकिस्तान की सांस्कृतिक निकटता की झलक देखने को मिली।

एयरपोर्ट पर राष्ट्रपति मिर्जियोयेव ने की अगवानी

प्रधानमंत्री मोदी के ताशकंद पहुंचने पर उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शावकत मिर्जियोयेव ने ताशकंद-हुमो अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उनकी अगवानी की। उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति कार्यालय के अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्रपति मिर्जियोयेव के निमंत्रण पर 29-30 अगस्त के राजकीय दौरे पर उज्बेकिस्तान पहुंचे हैं। उनके सम्मान में दोनों देशों के राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शित किए गए और गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

प्रधानमंत्री की यह यात्रा भारत और उज्बेकिस्तान के बीच रणनीतिक तथा सभ्यतागत संबंधों को आगे बढ़ाने के लिहाज से महत्वपूर्ण मानी जा रही है। यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश, रक्षा, डिजिटल संपर्क, ऊर्जा और शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा प्रस्तावित है।

प्रवासी भारतीय बने दोस्ती की कड़ी

ताशकंद में भारतीय समुदाय का स्वागत केवल प्रधानमंत्री के प्रति सम्मान का प्रदर्शन नहीं, बल्कि दोनों देशों के बीच लोगों के स्तर पर मौजूद सांस्कृतिक संबंधों की भी झलक रहा। प्रधानमंत्री मोदी ने भी प्रवासी भारतीयों की भूमिका को भारत और उज्बेकिस्तान के बीच संबंधों को मजबूत करने वाला जीवंत सेतु बताया।

प्रधानमंत्री की उज्बेकिस्तान यात्रा के बाद उनका मध्य एशिया दौरा आगे बढ़ेगा। 31 अगस्त से 1 सितंबर तक वह किर्गिज गणराज्य में होने वाले 26वें शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे।

नागेंद्र के इस्तीफे पर हरिप्रसाद का BJP पर पलटवार

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी (KPCC) कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में KPCC अध्यक्ष बी.के. हरिप्रसाद ने पूर्व मंत्री बी. नागेंद्र के इस्तीफे को लेकर भाजपा पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि नागेंद्र ने सार्वजनिक जीवन में नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा दिया है, लेकिन इसे भाजपा की जीत या विपक्ष के संघर्ष की सफलता के रूप में देखना उचित नहीं है। हरिप्रसाद ने आरोप लगाया कि नागेंद्र को लेकर जिस तरह की राजनीतिक बयानबाजी की जा रही है, वह दलित समुदाय के नेताओं को निशाना बनाने की राजनीति का हिस्सा है। उन्होंने भाजपा नेताओं द्वारा नागेंद्र के इस्तीफे को विकेट गिरने से जोड़कर किए जा रहे जश्न पर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि आरोप लगाना जांच एजेंसियों का काम है, जबकि किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने का अधिकार न्यायालय को है। उनके अनुसार, राजनीतिक दल या उनके कार्यालय अदालत की भूमिका नहीं निभा सकते। जांच और कानूनी प्रक्रिया पर उठाए सवाल हरिप्रसाद ने कहा कि वाल्मीकि निगम से जुड़े कथित वित्तीय अनियमितता का मामला सामने आने के बाद राज्य सरकार ने एसआईटी जांच के आदेश दिए थे। उन्होंने दावा किया कि जांच के आधार पर अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की गई और बाद में प्रवर्तन निदेशालय ने भी मामले की जांच की। नागेंद्र की भूमिका को लेकर हरिप्रसाद ने कहा कि उन्हें मिली जानकारी के अनुसार जांच में नागेंद्र के खिलाफ प्रत्यक्ष भूमिका साबित नहीं हुई है। उन्होंने विशेष अदालत के जमानत आदेश का हवाला देते हुए कहा कि अदालत के समक्ष उपलब्ध सामग्री के आधार पर नागेंद्र की कथित भूमिका को लेकर सवाल बने हुए हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि नागेंद्र एसआईटी की आरोपपत्र प्रक्रिया में आरोपी नहीं थे। हालांकि, मामले की वास्तविक स्थिति का निर्धारण जांच एजेंसियों की रिपोर्ट और न्यायालयीन प्रक्रिया के आधार पर ही किया जा सकता है। भाजपा के पुराने मामलों का भी किया उल्लेख हरिप्रसाद ने भ्रष्टाचार के मुद्दे पर भाजपा नेताओं को चुनौती देते हुए कर्नाटक की पुरानी बेल्लारी राजनीति और अवैध खनन से जुड़े मामलों का उल्लेख किया। उन्होंने जनार्दन रेड्डी तथा तत्कालीन मुख्यमंत्री बी.एस. येदियुरप्पा से जुड़े पुराने मामलों का हवाला देते हुए कहा कि भाजपा नेताओं को दूसरों पर आरोप लगाने से पहले अपने राजनीतिक इतिहास पर भी नजर डालनी चाहिए। उन्होंने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र के उस कथित बयान का भी जिक्र किया, जिसमें नागेंद्र को छोटी मछली बताया गया था। हरिप्रसाद ने चुनौती दी कि यदि भाजपा के पास किसी बड़ी मछली से संबंधित ठोस रिकॉर्ड या प्रमाण हैं, तो उन्हें सार्वजनिक किया जाना चाहिए और जांच के माध्यम से सत्य सामने आना चाहिए। जांच एजेंसियों के इस्तेमाल का लगाया आरोप KPCC अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि वर्ष 2014 के बाद केंद्रीय जांच एजेंसियों की कार्रवाई का सामना कर रहे कई विपक्षी नेता बाद में भाजपा या भाजपा नेतृत्व वाले गठबंधन में शामिल हुए और उनमें से कई मामलों में राहत मिली। उन्होंने केंद्र सरकार पर जांच एजेंसियों के राजनीतिक इस्तेमाल का आरोप लगाते हुए इसकी निष्पक्षता पर सवाल उठाया। हरिप्रसाद ने कहा कि भ्रष्टाचार के आरोपों का सामना कर रहे लोगों के मामले में कानून को समान रूप से लागू किया जाना चाहिए।

मोहन भागवत के बयान पर गदगद हुए बाबरी मस्जिद पक्षकार इकबाल अंसारी, बोले- उन्होंने बिल्कुल सही कहा

अयोध्या। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत के हिंदू-मुस्लिम एकता को लेकर दिए गए बयान की अयोध्या में बाबरी मस्जिद के पूर्व पक्षकार इकबाल अंसारी ने सराहना की है। अंसारी ने कहा कि भागवत ने बिल्कुल सही बात कही है और देश की प्रगति के लिए समाज के सभी वर्गों का साथ मिलकर आगे बढ़ना जरूरी है। दरअसल, अमेरिका दौरे पर गए मोहन भागवत ने शनिवार को न्यूयॉर्क में आयोजित वन वर्ल्ड, वन मैनिटी कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि अगर कोई हिंदू यह मानता है कि भारत में मुसलमान नहीं होने चाहिए, तो वह हिंदू नहीं रह जाएगा। उनके इस बयान को लेकर देश में

चर्चा शुरू हो गई है। इकबाल अंसारी ने समाचार एजेंसी से बातचीत में कहा कि मोहन भागवत ने देश की प्रगति, विकास और रोजगार की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बात कही है। उनके मुताबिक, भारत में हिंदू और मुसलमानों के बीच भाईचारा मजबूत होना चाहिए। अंसारी ने कहा कि देश को आगे बढ़ाने के लिए सभी नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। उन्होंने भागवत के बयान को भाईचारे और एकता की मिसाल बताते हुए कहा कि देश को ऐसे नेतृत्व की जरूरत है जो समाज के हर वर्ग की चिंता करे और विकास पर ध्यान केंद्रित करे। इकबाल अंसारी ने कहा कि भारत में अलग-अलग धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं, लेकिन इंसानियत और कर्म किसी धर्म की सीमा में बंधे नहीं हैं।

संपादकीय

आपदा की सीमा नहीं होती, इंसानियत की भी नहीं

प्रकृति जब अपना रौद्र रूप दिखाती है तो सीमाएं, भाषाएं और राष्ट्रीयताएं छोटी पड़ जाती हैं। नेपाल में आई भीषण बाढ़ और अचानक आई विनाशकारी बाढ़ ने एक बार फिर यह सवाल सामने रखा है कि प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए केवल राहत सामग्री पर्याप्त है या इसके लिए क्षेत्रीय सहयोग की एक मजबूत और स्थायी व्यवस्था भी जरूरी है। नेपाल में बाढ़ और भूस्खलन से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। बड़ी संख्या में लोग प्रभावित क्षेत्रों में फंसे हैं और कई भारतीय नागरिकों के भी संपर्क से बाहर होने की खबर सामने आई है। कर्नाटक के 54 पर्यटकों का सुरक्षित भारत लौटना राहत की खबर है, लेकिन यह घटना उन परिवारों की चिंता भी सामने लाती है जिनके अपने अभी तक संपर्क में नहीं हैं। भारत ने नेपाल के लिए राहत सामग्री और आवश्यक सहायता भेजकर पड़ोसी धर्म निभाया है। पिछले कुछ दिनों में राहत सामग्री लेकर कई उड़ानें भेजे जाने की जानकारी सामने आई है। यह केवल सरकारी सहायता नहीं, बल्कि संकट की घड़ी में पड़ोसी देश के साथ खड़े होने की मानवीय जिम्मेदारी भी है। लेकिन हर बड़ी प्राकृतिक आपदा के बाद कुछ दिनों तक राहत अभियान चलाकर हम अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं मान सकते। असली चुनौती आपदा आने से पहले की तैयारी है। मौसम का पूर्वानुमान, नदी के जलस्तर की निगरानी, समय पर चेतावनी, सुरक्षित निकासी मार्ग और स्थानीय प्रशासन की तत्परता–इन सभी को मजबूत करना होगा। जलवायु परिवर्तन ने इस चुनौती को और गंभीर बना दिया है। अनियमित बारिश, अचानक बादल फटना, तेज बाढ़ और भूस्खलन अब केवल पहाड़ी क्षेत्रों की समस्या नहीं रह गए हैं। भारत के अनेक हिस्से भी हर वर्ष ऐसी परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। इसलिए नेपाल की त्रासदी को केवल एक पड़ोसी देश की समस्या मानकर आगे बढ़ जाना उचित नहीं होगा। भारत और नेपाल के बीच भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध सदियों पुराने हैं। दोनों देशों की सीमाएं लोगों को अलग नहीं करतीं, बल्कि अनेक स्थानों पर रोजमर्रा का जीवन एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। ऐसे में प्राकृतिक आपदा के समय दोनों देशों के बीच तत्काल सूचना साझा करने और संयुक्त राहत व्यवस्था की जरूरत और बढ़ जाती है। विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों में ऐसी व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए, जिसमें मौसम और जलस्तर की चेतावनी दोनों देशों की स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों तक तत्काल पहुंचे। पर्यटकों और यात्रियों के लिए भी आपदा के समय पंजीकरण तथा संपर्क व्यवस्था को मजबूत किया जाना चाहिए, ताकि किसी संकट में यह पता लगाने में समय न लगे कि कौन कहां फंसा है। आज आवश्यकता केवल राहत पहुंचाने की नहीं, बल्कि आपदा से पहले तैयारी और आपदा के बाद पुनर्वास की है। प्रभावित परिवारों को भोजन और अस्थायी आश्रय देने के साथ उनके रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य की बहाली पर भी ध्यान देना होगा। नेपाल की वर्तमान त्रासदी हमें एक बड़ा सबक देती है–प्रकृति के सामने मनुष्य की शक्ति सीमित है, लेकिन तैयारी, तकनीक और आपसी सहयोग से नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। आपदा किसी देश की सीमा देखकर नहीं आती। इसलिए उससे मुकाबला भी सीमाओं में बंधकर नहीं किया जा सकता। भारत और नेपाल को इस संकट को एक अवसर में बदलते हुए ऐसी साझा आपदा प्रबंधन व्यवस्था विकसित करनी चाहिए, जो भविष्य में हजारों लोगों की जान बचा सके। किसी आपदा के बाद बचाए गए लोगों की संख्या महत्वपूर्ण होती है, लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण यह है कि अगली आपदा में कितने लोगों को बचाने की तैयारी आज से शुरू की गई। इंसानियत की सबसे बड़ी परीक्षा संकट की घड़ी में होती है। और इस परीक्षा में पड़ोसी का साथ देना ही सबसे बड़ी जीत है।

कृतज्ञता का भाव जाग जाए तो साधारण जीवन भी बन जाता है स्वर्ग

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

मनुष्य सदियों से स्वर्ग की कल्पना करता आया है। कोई मानता है कि अच्छे कर्मों के बाद मृत्यु के पश्चात स्वर्ग मिलेगा, कोई दान-पुण्य को उसका रास्ता समझता है, तो कोई तीर्थयात्रा, उपवास और पूजा-पाठ के माध्यम से उस अदृश्य संसार को पाने की कोशिश करता है। लेकिन कभी हमने ठहरकर यह सोचने का प्रयास किया है कि जिस स्वर्ग की तलाश हम मृत्यु के बाद करते हैं, उसकी अनेक सुविधाएं और खुशियां शायद हमें आज ही उपलब्ध हैं? सुबह आंख खुलते ही हमारे सामने सुविधाओं की एक ऐसी दुनिया होती है, जिसकी कल्पना कुछ शताब्दियों पहले के बड़े-बड़े राजा भी नहीं कर सकते थे। एक स्विच दबाते ही अंधेरा दूर होकर प्रकाश फैल जाता है। पंखा और वातानुकूलन कमरे का तापमान बदल देते हैं। नल खोलते ही पानी उपलब्ध हो जाता है। रसोई में कुछ ही मिनटों में भोजन तैयार हो जाता है। और फिर मोबाइल की स्क्रीन पर पूरी दुनिया सिमट आती है। हजारों किलोमीटर दूर बैठे परिवार के सदस्य कुछ क्षणों में वीडियो कॉल के जरिए सामने दिखाई देने लगते हैं। ज्ञान और सूचनाओं का विशाल भंडार हमारी हथेली में मौजूद है। अगर कोई पुराना राजा आज के घर में आए...

कल्पना कीजिए, सदियों पहले का कोई शक्तिशाली राजा अचानक आज के एक सामान्य मध्यमवर्गीय घर में पहुंच जाए। वह बिजली की रोशनी देखकर चकित होगा। ठंडी हवा देने वाले उपकरणों को देखकर आश्चर्य करेगा। नल से निकलते पानी को किसी चमत्कार से कम नहीं समझेगा और मोबाइल फोन को देखकर शायद उसे लगे कि उसके सामने कोई जादुई यंत्र है। जिस सुविधा को हम रोजमर्रा की सामान्य वस्तु समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, वह कभी राजाओं के लिए भी उपलब्ध नहीं थी। फिर सवाल उठता है–इतनी सुविधाओं के बावजूद आधुनिक मनुष्य संतुष्ट क्यों नहीं है? सुविधाएं बढ़ीं, संतोष घटता गया मानव स्वभाव बड़ा विचित्र है। जो वस्तु कल मिली थी, आज सामान्य लगने लगती है और कल जो उपलब्धि सपना थी, आज छोटी लगने लगती है। घर में एसी चलता है तो खुशी नहीं होती, लेकिन वह खराब हो जाए तो परेशानी शुरू हो जाती है। मोबाइल हाथ में है तो उसकी मौजूदगी महसूस नहीं होती, लेकिन नेटवर्क चला जाए तो बेचैनी होने लगती है। अपना घर होने पर भी संतोष नहीं, क्योंकि किसी दूसरे का घर बड़ा दिखाई देता है। अपनी गाड़ी होने पर भी मन शांत नहीं, क्योंकि किसी और के पास उससे महंगी गाड़ी है। यहीं से तुलना जन्म लेती है और तुलना धीरे-धीरे संतोष को निगल जाती है। एक ही शहर में स्वर्ग और संघर्ष हमारे आसपास ही ऐसी दो अलग-अलग दुनिया मौजूद हैं, जिन्हें देखकर जीवन की वास्तविकता समझी जा सकती है। एक परिवार के लिए मोबाइल का नया मॉडल खरीदना सामान्य बात है, जबकि किसी दूसरे परिवार का बच्चा पढ़ाई के लिए मोबाइल उपलब्ध न होने के कारण अवसर से वंचित हो जाता है। किसी के लिए पानी गर्म होने में कुछ मिनट की देरी परेशानी बन जाती है, वहीं किसी दूसरे परिवार के लिए दिनभर पर्याप्त पानी मिल जाना भी किसी वरदान से कम नहीं होता। किसी के घर में भोजन की पसंद पर चर्चा होती है, तो किसी घर में यह चिंता होती है कि अगला भोजन कब और कैसे मिलेगा। इस अंतर को समझने के लिए किसी दार्शनिक ग्रंथ की आवश्यकता नहीं है। बस अपने आसपास की दुनिया को थोड़ी संवेदनशील नजर से देखने की जरूरत है। नरक और स्वर्ग आखिर कहां हैं? शायद स्वर्ग और नरक को केवल मृत्यु के बाद की किसी जगह के रूप में देखना अधूरा दृष्टिकोण है। परिस्थितियां, मनःस्थिति और हमारा नजरिया मिलकर जीवन को स्वर्ग या नरक जैसा बना सकते हैं। जिस व्यक्ति के पास बहुत कुछ है लेकिन वह हर समय शिकायत करता है, उसका मन अशांत रह सकता है। दूसरी ओर सीमित साधनों में रहने वाला कोई व्यक्ति अपने परिवार, स्वास्थ्य, भोजन और रिश्तों के लिए आभारी होकर जीवन में संतोष अनुभव कर सकता है। इसलिए वास्तविक प्रश्न यह नहीं कि हमारे पास कितना है, बल्कि यह है कि हम जो कुछ पा चुके हैं, उसकी कीमत कितनी समझते हैं। एक छोटा-सा प्रयोग बदल सकता है जीवन यदि मन में लगातार शिकायत रहती है तो रात को सोने से पहले प्रतिदिन केवल पांच बातों के लिए स्वयं को भाग्यशाली मानकर देखिए– - आज मुझे सांस लेने का अवसर मिला। - आज मुझे पीने के लिए पानी मिला। - आज मुझे भोजन मिला। - आज मेरे पास सिर छिपाने के लिए स्थान है। - आज मेरे अपने लोग मेरे जीवन में हैं। हो सकता है कि समस्याएं उसी क्षण समाप्त न हों, लेकिन उन्हें देखने का नजरिया अवश्य बदल जाए। कृतज्ञता ही मन का इंद्रधनुष

जीवन की सुंदरता केवल बड़ी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उन छोटी-छोटी चीजों में छिपी है जिन्हें हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। सुबह की पहली किरण, परिवार के सदस्य की मुस्कान, घर में पकते भोजन की खुशबू, किसी अपने का फोन, स्वस्थ शरीर और शांतिपूर्ण नींद–ये सब जीवन के ऐसे उपहार हैं जिनकी कीमत बाजार में तय नहीं की जा सकती। कृतज्ञता मनुष्य को अभाव से निकालकर उपलब्धियों की ओर देखने की दृष्टि देती है। वह परिस्थितियों को हमेशा नहीं बदलती, लेकिन परिस्थितियों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया जरूर बदल देती है। प्रेरक प्रसंग का संदेश एक व्यक्ति ने जीवनभर सुख की तलाश की। उसे लगा कि धन बढ़ेगा तो सुख मिलेगा। धन आया तो बड़ी संपत्ति की इच्छा हुई। संपत्ति मिली तो प्रतिष्ठा की चाह बढ़ी। प्रतिष्ठा मिली तो दूसरों से आगे निकलने की होड़ शुरू हो गई। एक दिन उसने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि सुख उसके साथ चल रहा था, लेकिन वह हमेशा उससे आगे भागता रहा। तब उसे समझ आया कि सुख पाने के लिए हमेशा कुछ नया हासिल करना जरूरी नहीं; कई बार अपने पास मौजूद चीजों को नए नजरिए से देखना ही पर्याप्त होता है। यही इस पूरे विचार का सार है। मृत्यु के बाद क्या होता है, इसका निश्चित उत्तर किसी के पास नहीं है। लेकिन इतना हमारे सामने स्पष्ट है कि आज हमारे पास जीवन है, सांस है, प्रकृति है, रिश्ते हैं और अनेक ऐसी सुविधाएं हैं जिन्हें कभी असंभव समझा जाता था। फिर भी यदि हमारा मन केवल शिकायतों से भरा है तो समस्या शायद जीवन में कम और दृष्टिकोण में अधिक है। कहते हैं–भगवान ने मनुष्य को धरती पर जीवन दिया, लेकिन मनुष्य ने उसी जीवन में शिकायतों का संसार खड़ा कर लिया। इसलिए आज से अभावों की गिनती थोड़ी कम और कृतज्ञताओं की गिनती थोड़ी ज्यादा कीजिए। क्योंकि संभव है कि जिस स्वर्ग की तलाश में हम पूरी जिंदगी भटकते रहें, वह कहीं दूर नहीं, बल्कि हमारी अपनी सांसों, रिश्तों और संतोष से भरे मन के भीतर ही मौजूद हो। सच्चा स्वर्ग कोई स्थान नहीं, बल्कि वह मनःस्थिति है जिसमें इंसान अपने जीवन के लिए धन्यवाद करना सीख जाता है।

इंद्रधनु मन के में दिखाई देता है जीवन, साहित्य और राष्ट्रप्रेम का सप्तरंगी संसार

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

साहित्य केवल शब्दों का संसार नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों, संवेदनाओं, संघर्षों और सपनों को समाज तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम है। जब किसी रचनाकार की लेखनी जीवन के लंबे अनुभवों से गुजरती है तो उसकी रचनाएं केवल कविता नहीं रह जातीं, बल्कि समय और समाज का दस्तावेज बन जाती हैं। वरिष्ठ साहित्यकार एवं कवि हरिहर प्रसाद पाठक का काव्य-संग्रह इंद्रधनु मन के इसी साहित्यिक यात्रा का सुंदर उदाहरण है।

इस पुस्तक की समीक्षा करते हुए कवि एवं साहित्यकार तथा विश्व हिंदी शोध एवं संवर्धन अकादमी की आजमगढ़ इकाई के महामंत्री लालबहादुर चौरसिया लाल ने कहा कि इंद्रधनु मन के कविवर हरिहर प्रसाद पाठक की लंबी रचनात्मक यात्रा का व्यापक दस्तावेज है। सैनिक शिक्षा कोर में सूबेदार पद से सेवानिवृत्त पाठक जी ने अपने जीवन में अनुशासन, संघर्ष और राष्ट्रसेवा को करीब से देखा है। यही अनुभव उनकी कविताओं में संवेदना, संकल्प और सामाजिक चेतना के रूप में दिखाई देता है।

सैनिक जीवन से साहित्य की राह तक

हरिहर प्रसाद पाठक का जीवन स्वयं किसी प्रेरक प्रसंग से कम नहीं है। भारत-पाकिस्तान के बीच 1971 में हुए युद्ध के साक्षी रहे पाठक जी ने सैनिक जीवन की कठिनाइयों को देखा और देश के प्रति जिम्मेदारी को महसूस किया। सेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद भी उनके भीतर का कर्मठ व्यक्तित्व शांत नहीं हुआ। उन्होंने साहित्य को अपना रचनात्मक माध्यम बनाया और जीवन के अनुभवों को कविता के रूप में अभिव्यक्त किया।

जीवन के 87वें वसंत की ओर बढ़ते हुए भी उनकी साहित्य-साधना निरंतर जारी है। यह तथ्य आज की युवा पीढ़ी के लिए स्वयं में एक प्रेरक संदेश है कि उम्र रचनात्मकता की सीमा नहीं होती। इच्छाशक्ति और सकारात्मक सोच हो तो जीवन के किसी भी पड़ाव पर सृजन की नई शुरूआत की जा सकती है।

इंद्रधनु मन के में जीवन के अनेक रंग

संकल्प प्रकाशन, दिल्ली से वर्ष 2023 में प्रकाशित यह 264 पृष्ठों का काव्य-संग्रह कवि की किशोरावस्था से लेकर जीवन के उत्तरार्ध तक के अनुभवों को समेटे हुए है। पुस्तक को कवि ने अपनी दिवंगत अर्धांगिनी स्वर्गीय दुर्गावती देवी की स्मृति को समर्पित किया है। इस समर्पण में प्रेम, स्मृति और जीवन-संगिनी के प्रति गहरी

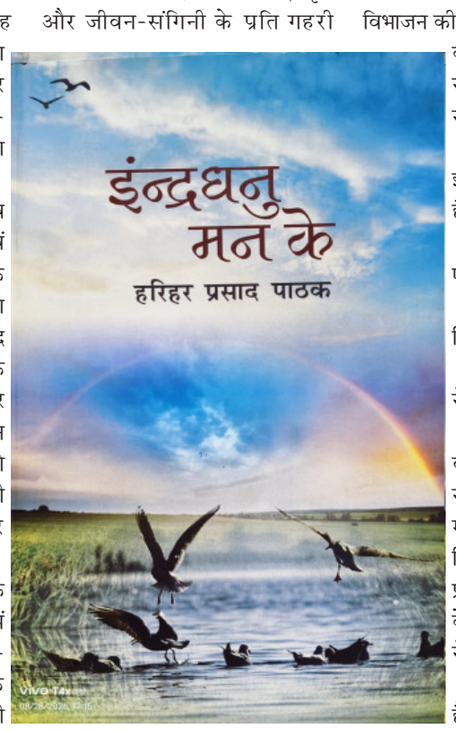

आत्मीयता दिखाई देती है।

पुस्तक का नाम इंद्रधनु मन के अपने आप में इसकी विषय-विविधता को व्यक्त करता है। जिस प्रकार इंद्रधनुष में अनेक रंग मिलकर एक सुंदर दृश्य रचते हैं, उसी प्रकार इस संग्रह में प्रेम, प्रकृति, राष्ट्रभक्ति, सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना, ग्रामीण जीवन, दर्शन, बाल-मन और भाषा की विविध छवियां दिखाई देती हैं।

पुस्तक में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र और पंडित करुणापति त्रिपाठी जैसे साहित्य-मनीषियों के अनुशंसा-पत्र भी शामिल हैं। आजमगढ़ के साहित्य-पुरोधा प्रोफेसर प्रभुनाथ सिंह मयंक का पूर्वाभास पाठकों के भीतर पुस्तक को पढ़ने की उत्सुकता पैदा करता है।

आशा का दीप जलाने वाला कवि

कविवर पाठक की कविताओं में दीप, प्रकाश, भोर और बसंत जैसे बिंब बार-बार दिखाई देते हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से कवि अंधकार के बीच आशा का संदेश देता है। समाज में निराशा, स्वार्थ, भ्रष्टाचार और विभाजन की स्थितियों के बावजूद कवि का विश्वास मनुष्य की सकारात्मक शक्ति में बना रहता है।

उनकी काव्य-दृष्टि को इन भावों से समझा जा सकता है–

सघन तम की गोद में, मैं एक दीपक जल रहा हूँ।
साथ मेरे कोटि-कोटि दिए जलें, मैं चाहता हूँ,
अलग हो तन, किंतु मन से मन मिले मैं चाहता हूँ।

इन पंक्तियों में केवल व्यक्तिगत भावना नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और मानवता की व्यापक कामना छिपी है। जाति, धर्म, भाषा और प्रांत के आधार पर बंटते समाज के बीच कवि मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का संदेश देता है।

प्रकृति में भी दिखाई देती है जीवंतता

पाठक जी की कविताओं में प्रकृति स्थिर चित्र की तरह नहीं, बल्कि जीवंत पात्र की तरह सामने आती है। सूरज, धरती, उषा, पलाश और पक्षियों के माध्यम से कवि प्रकृति को मानवीय भावनाओं से जोड़ते हैं।

उदाहरण के रूप में उनकी काव्यात्मक कल्पना में प्रकृति का यह सुंदर दृश्य उभरता है–

सूरज ने हाथों से छू लिया पलाश-वन,
धरती के आँगन में मधुबन हँसने लगा।

इसी प्रकार उषा और सूर्य के मिलन को कवि ने अत्यंत भावपूर्ण ढंग से चित्रित किया है–

जब छू देता रवि निज कर से, उषा के अरुण कपोल लोल।
खग-कुल के माधुरिम कलरव से नादित हो जाता है खगोल।

इन पंक्तियों में प्रकृति, सौंदर्य और कल्पना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

राष्ट्रप्रेम और सामाजिक चेतना की मजबूत आवाज

कविवर हरिहर प्रसाद पाठक की रचनाओं में राष्ट्रप्रेम प्रमुख स्वर के रूप में उभरता है। उन्होंने स्वतंत्रता, राष्ट्रीय एकता और देश की अखंडता को लेकर समाज को जागरूक करने का प्रयास किया है। उनकी कविताएं नेताओं और नागरिकों दोनों को अपने कर्तव्य के प्रति सजग होने का संदेश देती हैं।

उनकी एक रचना में देश के नेतृत्व को संबोधित करते हुए सवाल उठाया गया है–

स्वाधीन देश के नेता, तुम आजादी को तुम क्या जानो,
धोती-कुर्ता-टोपी पहने, अपने को पहले पहचानो।

वहीं हिंदी भाषा के प्रति उनका प्रेम भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है–

हिंदी माथे का चंदन है, माँ के ललाट की बिंदी है।

भारत की संपर्की भाषा यदि है कोई तो हिंदी है।

इन पंक्तियों में भाषा के प्रति सम्मान और भारतीय सांस्कृतिक चेतना का भाव दिखाई देता है।

शृंगार से लेकर ग्रामीण जीवन तक अनेक विषय

इंद्रधनु मन के को किसी एक काव्य-विधा या भावभूमि में सीमित करना कठिन है। कहीं विरह की पीड़ा है तो कहीं शृंगार की कोमलता। कहीं नारी-सशक्तिकरण की आवाज है तो कहीं ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों का चित्रण।

शृंगारिक संवेदना की एक झलक कवि की इन पंक्तियों में मिलती है–

घूंघट पट खोलो आज प्रिये,
मैं तुमको अंगीकार करूँ।

इसी रचना में प्रेम को केवल बाहरी सौंदर्य तक सीमित न रखते हुए मन की आत्मीयता से जोड़ा गया है। यह कवि की संवेदनशील दृष्टि को दशार्ता है।

पुस्तक में अतुकांत कविताओं के साथ मात्रिक छंद, दोहे, मुक्तक, बाल-कविताएं और विभिन्न भाषायी रंग भी देखने को मिलते हैं। भोजपुरी और ब्रजभाषा की मिठास के साथ दार्शनिक चिंतन का पुट भी संग्रह को व्यापक बनाता है।

साहित्यिक यात्रा के महान कवियों को नमन

पुस्तक का उत्तरार्ध विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पृष्ठ 225 से 259 तक कविवर पाठक ने हिंदी साहित्य के अनेक महान कवियों और उनकी साहित्यिक विरासत को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया है।

कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, पद्माकर, रहीम, रसखान, रत्नाकर, हरिऔध, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और रामधारी सिंह दिनकर जैसे साहित्यकारों को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए कवि ने हिंदी साहित्य की गौरवशाली परंपरा को नई पीढ़ी के सामने रखने का प्रयास किया है।

यह हिस्सा पाठकों को साहित्य की उस यात्रा से परिचित कराता है, जिसमें अलग-अलग युगों के कवियों ने भारतीय समाज, संस्कृति, दर्शन और मानवीय मूल्यों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया।

प्रेरक प्रसंग : उम्र नहीं, उत्साह मायने रखता है

इंद्रधनु मन के का सबसे बड़ा प्रेरक पक्ष यह भी है कि इसके रचनाकार ने जीवन के उत्तरार्ध में भी अपनी साहित्य-साधना को जीवंत रखा है। सैनिक जीवन का अनुशासन, युद्ध का अनुभव, पारिवारिक सुख-दुख, सामाजिक परिवर्तन और साहित्य के प्रति समर्पण–इन सभी अनुभवों ने उनकी लेखनी को समृद्ध किया।

\यह पुस्तक मानो पाठक से कहती है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, मन के भीतर उम्मीद का दीप जलता रहना चाहिए। एक दीपक अकेला हो सकता है, लेकिन उसकी रोशनी दूसरे दीपों को जलाने की प्रेरणा दे सकती है।

यही कारण है कि यह काव्य-संग्रह केवल साहित्य पढ़ने वालों के लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी लोगों के लिए प्रेरक है जो जीवन में किसी भी उम्र में नया सृजन करना चाहते हैं।

समीक्षा का निष्कर्ष

कुल मिलाकर इंद्रधनु मन के विविध भावों और रंगों से सजा ऐसा काव्य-संग्रह है जिसमें व्यक्तिगत अनुभव से लेकर सामाजिक सरोकार, प्रकृति से लेकर राष्ट्रप्रेम और प्रेम की कोमल अनुभूति से लेकर मानवीय एकता का व्यापक संदेश तक समाहित है। कवि एवं समीक्षक लालबहादुर चौरसिया लाल के अनुसार यह पुस्तक केवल कविताओं का संग्रह नहीं, बल्कि लोक-मंगल, लोक-रक्षण और लोक-रंजन की भावना से ओत-प्रोत एक साहित्यिक दस्तावेज है। कविवर हरिहर प्रसाद पाठक ने अपने अनुभवों और संवेदनाओं को शब्दों का ऐसा गुलदस्ता दिया है, जिसमें जीवन के अनेक रंग एक साथ दिखाई देते हैं। इंद्रधनु मन के साहित्य के अध्येताओं, विद्यार्थियों और कविता-प्रेमियों को संवेदना, चिंतन और आनंद–तीनों प्रदान करने वाला संग्रह बनकर सामने आता है। साहित्य जगत को ऐसा बहुरंगी काव्य-संग्रह देने के लिए कविवर हरिहर प्रसाद पाठक के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त की गई हैं। उनकी साहित्य-साधना इसी प्रकार निरंतर आगे बढ़ती रहे और आने वाली पीढ़ियों को उनके अनुभवों तथा रचनात्मक दृष्टि से प्रेरणा मिलती रहे–यही कामना है।

— लालबहादुर चौरसिया लाल
कवि एवं साहित्यकार
महामंत्री, विश्व हिंदी शोध एवं संवर्धन अकादमी, आजमगढ़ इकाई

नई पीढ़ी पूछ रही है — धर्म क्या है ?

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

समय की यात्रा जब इतिहास के लंबे गलियारों से होकर गुजरती है, तो मनुष्य की उपलब्धियों के साथ उसके संघर्ष भी दिखाई देते हैं। सभ्यताएं बनीं, नगर बसे, मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर और गुरुद्वारे बने, धार्मिक ग्रंथों की रचना हुई और संतों-महात्माओं ने प्रेम, करुणा, अहिंसा तथा शांति का संदेश दिया। फिर भी इतिहास में युद्ध, हिंसा, सत्ता-संघर्ष और मनुष्य द्वारा मनुष्य पर अत्याचार की घटनाएं भी दर्ज हैं। यहीं से एक गंभीर प्रश्न जन्म लेता है–यदि धर्म मनुष्य को शांति और करुणा का मार्ग दिखाता है, तो मानव समाज में अशांति इतनी लंबे समय तक क्यों बनी रही? यह प्रश्न किसी एक धर्म के सामने नहीं, बल्कि मनुष्य की धार्मिक समझ के सामने है। धर्म को मानना या समझना?

बचपन से हमें अनेक बातें परंपरा के रूप में सिखाई जाती हैं। क्या करना है, क्या नहीं करना है, क्या पवित्र है और किस बात को श्रद्धा से स्वीकार करना है–इन सबकी जानकारी हमें परिवार और समाज से मिलती है।

लेकिन जीवन की एक अवस्था ऐसी आती है, जब मनुष्य केवल सुनना नहीं चाहता, वह समझना भी चाहता है।

यही वह पड़ाव है जहां नई पीढ़ी के प्रश्न जन्म लेते हैं।

वह पूछती है–यदि कोई विचार सत्य है तो उसके बारे में प्रश्न करने से डरना क्यों? यदि कोई परंपरा कल्याणकारी है तो उसके अर्थ और उद्देश्य को समझने में आपत्ति क्यों? यदि धर्म मनुष्य को बेहतर बनाने का मार्ग है तो उसके प्रभाव का सबसे बड़ा प्रमाण हमारे व्यवहार में क्यों न दिखाई दे?

शायद धर्म का उद्देश्य केवल विश्वास पैदा करना नहीं, बल्कि जीवन को अर्थपूर्ण बनाना भी है।

दर्शन की राह पर चलता प्रश्न

भारतीय चिंतन परंपरा में प्रश्न पूछने की संस्कृति बहुत पुरानी रही है। जिज्ञासा से ज्ञान का जन्म होता है और संवाद से विचार विकसित होते हैं। दर्शन मनुष्य से कहता है–प्रश्न करो।

विवेक कहता है–परखो। अनुभव कहता है–स्वयं देखो। और आत्मचिंतन कहता है–सबसे पहले अपने भीतर झांको। यही यात्रा मनुष्य को बाहरी आडंबर से भीतर की सच्चाई तक ले जा सकती है। धर्म यदि केवल पहचान बन जाए तो उसका केंद्र बदल जाता है। फिर सवाल यह नहीं रह जाता कि मैं कैसा मनुष्य बन रहा हूं?, बल्कि सवाल यह बन जाता है कि मैं किस धर्म या समुदाय से हूं? यहीं से धार्मिकता और मानवता के बीच दूरी पैदा होने का खतरा बढ़ जाता है। धर्म की असली परीक्षा कहां? माथे पर धार्मिक चिह्न लगाना आसान है, लेकिन व्यवहार में करुणा लाना कठिन है। पूजा करना सरल हो सकता है, मगर अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना कठिन है। किसी धार्मिक ग्रंथ को पढ़ लेना आसान है, लेकिन उसके मूल संदेश को अपने जीवन में उतारना

कहीं अधिक कठिन है। इसीलिए धर्म की वास्तविक परीक्षा शायद पूजा-स्थल की चौखट पर नहीं, बल्कि मनुष्य के व्यवहार में होनी चाहिए। यदि प्रार्थना के बाद भी मन में घृणा बनी रहे, ज्ञान के बाद भी अहंकार कम न हो, पूजा के बाद भी कमजोर व्यक्ति के प्रति संवेदना न जागे और ईश्वर का नाम लेने के बावजूद दूसरे मनुष्य की गरिमा का सम्मान न किया जाए, तो आत्मचिंतन आवश्यक है। धर्म कितना जाना गया, इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि धर्म से मनुष्य कितना बदला। नई पीढ़ी के प्रश्नों से डरना नहीं चाहिए आज की युवा पीढ़ी सूचना के ऐसे युग में बड़ी हो रही है, जहां उसके सामने दुनिया के विभिन्न विचार, संस्कृतियां और दर्शन एक साथ उपलब्ध हैं। वह प्रश्न करती है, तुलना करती है और तर्क तलाशती है। यह प्रश्न परंपराओं के लिए चुनौती अवश्य हैं, लेकिन इन्हें संकट मानना आवश्यक नहीं। वास्तव में प्रश्न किसी जीवंत विचार-परंपरा की कमजोरी नहीं, उसकी शक्ति हो सकते हैं। जब कोई युवा पूछता है–धर्म प्रेम सिखाता है तो नफरत क्यों? धर्म शांति की बात करता है तो हिंसा क्यों? धर्म मनुष्य को जोड़ने के लिए है तो पहचान की दीवारें क्यों? तो इन प्रश्नों को दबाने के बजाय उनके साथ संवाद करना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर हमें नहीं पता तो यह कह देना कि मुझे नहीं पता, आइए मिलकर समझते हैं भी ज्ञान और विनम्रता का परिचय है। हर प्रश्न का तुरंत उत्तर देना आवश्यक नहीं, लेकिन हर ईमानदार प्रश्न को सम्मान देना आवश्यक है। एक छोटा-सा प्रेरक प्रसंग एक युवक अपने बुजुर्ग मार्गदर्शक के पास गया और पूछा, धर्म क्या है? बुजुर्ग ने उसे कोई ग्रंथ नहीं दिया। उन्होंने केवल कहा, आज घर लौटते समय रास्ते में मिलने वाले लोगों को ध्यान से देखना। युवक ने वैसा ही किया। उसने मजदूर को धूप में काम करते देखा, एक वृद्ध को सड़क पार करते देखा, एक बच्चे को भूख से परेशान देखा और एक दुकानदार को ईमानदारी से अपना काम करते देखा। अगले दिन वह फिर बुजुर्ग के पास पहुंचा। बुजुर्ग ने पूछा, क्या देखा? युवक बोला, हर व्यक्ति अपने जीवन का संघर्ष लड़ रहा है। बुजुर्ग मुस्कुराए और बोले, अब किसी पूजा से पहले यह समझने की कोशिश करना कि सामने वाला भी तुम्हारी तरह सुख-दुख वाला मनुष्य है। शायद धर्म की यात्रा वहीं से शुरू होती है। यह प्रसंग हमें बताता है कि धर्म केवल विचार नहीं, व्यवहार की साधना भी है। आस्था से मानवता की ओर धार्मिक परंपराएं मनुष्य को नैतिकता, संयम, सेवा, करुणा और आत्मचिंतन की प्रेरणा दे सकती हैं। लेकिन जब धार्मिक पहचान मानवता से बड़ी हो जाती है, तब समस्या पैदा होती है। एक व्यक्ति की प्रार्थना का तरीका दूसरे से अलग हो सकता है। पूजा-पद्धति अलग हो सकती है। भाषा और संस्कृति अलग हो सकती है। लेकिन भूख, पीड़ा, प्रेम, सम्मान और करुणा की अनुभूति मनुष्य को जोड़ती है। इसलिए धर्म की व्यापक यात्रा शायद पहचान से मानवता तक जाने की यात्रा है। आने वाली पीढ़ी को क्या दें? नई पीढ़ी को केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि यह मानो और प्रश्न मत करो। उसे यह भी बताना होगा कि परंपरा क्यों बनी, उसके पीछे क्या मूल्य हैं और वर्तमान जीवन में उनका अर्थ क्या है। उसे प्रश्न करने दीजिए। उसे पढ़ने दीजिए। उसे अलग विचार सुनने दीजिए। उसे संवाद करने दीजिए। क्योंकि जो विश्वास प्रश्नों से गुजरकर मजबूत होता है, वह केवल भय या दबाव से स्वीकार किए गए विश्वास से कहीं अधिक गहरा होता है। आज आवश्यकता ऐसे धार्मिक संवाद की है जिसमें श्रद्धा के साथ विवेक हो, परंपरा के साथ संवेदना हो और आस्था के साथ आत्मचिंतन भी हो। धर्म का सबसे बड़ा प्रमाण शायद धर्म का सबसे बड़ा प्रमाण यह नहीं कि हम कितनी बार पूजा करते हैं, कितनी बार प्रार्थना करते हैं या धार्मिक प्रतीकों को कितना महत्व देते हैं। धर्म का वास्तविक प्रभाव तब दिखाई देता है जब–किसी कमजोर व्यक्ति के प्रति हमारा व्यवहार बदलता है, किसी पीड़ित के लिए हमारे भीतर करुणा जागती है, क्रोध के स्थान पर संयम आता है, अहंकार के स्थान पर विनम्रता आती है, और

लालबाग बचाने की उठी आवाज

प्रवीण शेट्टी बोले—पार्क की जमीन के इस्तेमाल पर गंभीरता से हो विचार

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। बेंगलुरु के ऐतिहासिक लालबाग में रविवार को कर्नाटक रक्षण वेदिके के अध्यक्ष प्रवीण शेट्टी ने राज्य सरकार के हालिया पार्क एवं उद्यान भूमि संबंधी विधेयक को लेकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि उद्यान की कुल भूमि के पांच प्रतिशत हिस्से का इस्तेमाल अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिए किए जाने के प्रावधान पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए।

हाल के दिनों में कर्नाटक सरकार के पार्क एवं उद्यान भूमि से जुड़े संशोधन को लेकर पर्यावरण संरक्षण और शहरी विकास के बीच संतुलन को लेकर बहस तेज हुई है। रिपोर्टों के अनुसार संशोधन में सरकारी पार्क एवं उद्यान भूमि के सीमित हिस्से का सार्वजनिक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए उपयोग किए जाने का प्रावधान है। हरित क्षेत्र और विकास के बीच संतुलन पर जोर लालबाग में अपने

संबोधन के दौरान प्रवीण शेट्टी ने पार्क की भूमि के उपयोग को लेकर सरकार और नागरिकों के बीच चर्चा की आवश्यकता पर जोर दिया। उनका कहना था कि सार्वजनिक विकास कार्यों के लिए भूमि के उपयोग संबंधी निर्णय लेते समय शहर के हरित क्षेत्रों और पर्यावरणीय महत्व को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

लालबाग बेंगलुरु के प्रमुख हरित क्षेत्रों में शामिल है और लंबे समय से शहर के नागरिकों के लिए प्राकृतिक वातावरण, वनस्पति तथा सार्वजनिक मनोरंजन का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।

5 प्रतिशत प्रावधान को लेकर बहस तेज

कर्नाटक सरकार के पार्क भूमि संबंधी संशोधन में पांच प्रतिशत तक भूमि को सार्वजनिक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए उपयोग करने की अनुमति से जुड़े प्रावधान को लेकर राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर अलग-अलग मत सामने आए हैं। हाल में लालबाग में नागरिकों और पर्यावरण समूहों ने भी इस प्रावधान के विरोध में मानव श्रृंखला बनाकर अपनी चिंता जताई थी। वहीं, इस प्रावधान के समर्थक पक्ष में शहरी बुनियादी ढांचे और सार्वजनिक परियोजनाओं के लिए भूमि उपलब्ध कराने की आवश्यकता को प्रमुखता दी जा रही है। ऐसे में मुद्दे पर पर्यावरण संरक्षण और विकास की जरूरतों के बीच संतुलन को लेकर चर्चा जारी है।

नागरिकों की नजर अब सरकार के अगले कदम पर

लालबाग में हुई गतिविधियों के बीच पार्क और उद्यान भूमि के संरक्षण को लेकर नागरिकों की रुचि बढ़ी है। प्रवीण शेट्टी के बयान ने भी इस बहस को सार्वजनिक मंच पर सामने रखा है। मुद्दा अब केवल किसी एक उद्यान की भूमि तक सीमित नहीं है, बल्कि तेजी से बढ़ते बेंगलुरु में हरित क्षेत्रों के संरक्षण और आवश्यक बुनियादी ढांचे के विकास के बीच संतुलन का विषय बन गया है। आने वाले दिनों में सरकार और संबंधित पक्षों के रुख से इस मुद्दे की दिशा और स्पष्ट होने की उम्मीद है।

ईश्वरप्पा ने महिला जैन संगीत मंडल को दिया भक्ति का न्योता

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

शिवमोग्गा, 30 अगस्त 2026। कर्नाटक के पूर्व उपमुख्यमंत्री के.एस. ईश्वरप्पा के विशेष आमंत्रण पर प्रसिद्ध महिला जैन संगीत मंडल की गायिका श्रीमती रेखा बेन एवं उनकी मंडली ने श्रीमती गीता जैन के निवास पर भक्ति गीतों के अभ्यास कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य ईश्वरप्पा के निवास पर प्रस्तावित भक्ति आयोजन की प्रस्तुति को बेहतर ढंग से तैयार करना था।

अभ्यास के दौरान महिला मंडल की सदस्यों ने विभिन्न भक्ति गीतों की प्रस्तुति देकर आध्यात्मिक वातावरण बनाया। बताया गया कि ईश्वरप्पा की इच्छा है कि महिला संगीत मंडल उनके निवास पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम में भक्ति गीत प्रस्तुत करे और श्रद्धालुओं को भक्ति रस से जोड़ें।

ईश्वरप्पा ने भक्तों से कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का आग्रह किया। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं से भी भक्ति कार्यक्रम में भाग लेकर आध्यात्मिक आनंद लेने की अपील की। आयोजन में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए अल्पाहार की व्यवस्था किए जाने की जानकारी भी दी गई।

इस अवसर पर महिला मंडल की बहनों ने ईश्वरप्पा का तिलक लगाकर, हार पहनाकर, नारियल भेंट कर और मिठाई खिलाकर सम्मान किया। बहनों ने उनकी कलाई पर राखी भी बांधी। इसके बाद ईश्वरप्पा ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बहनों को शगुन के रूप में भेंट प्रदान की।

कार्यक्रम के दौरान संतोषी माता की भक्त श्रीमती गीता बेन जैन ने संतोषी माता का मंदिर बनवाने की अपनी मनोकामना भी व्यक्त की। ईश्वरप्पा के निवास पर आयोजित इस मिलन के दौरान महिलाओं में उत्साह और प्रसन्नता का माहौल रहा। कार्यक्रम के अंत में महिला मंडल की सदस्यों ने ईश्वरप्पा के साथ स्मृति स्वरूप तस्वीरें भी खिंचवाईं। समाचार प्रेषकः शांतिलाल साकरीया, शिवमोग्गा।

जेपी भवन में गरजे कुमारस्वामी केंद्रीय मंत्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कर्नाटक के मुद्दों पर सरकार को घेरा

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। केंद्रीय भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्री तथा जनता दल (सेक्युलर) के वरिष्ठ नेता एच.डी. कुमारस्वामी ने रविवार को बेंगलुरु स्थित जेडीएस के प्रदेश मुख्यालय जेपी भवन में पत्रकारों को संबोधित किया। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उन्होंने कर्नाटक से जुड़े विभिन्न राजनीतिक और जनहित के मुद्दों पर अपनी बात रखी। कुमारस्वामी का जेपी भवन में मीडिया को संबोधित करने का कार्यक्रम ऐसे समय हुआ है, जब कर्नाटक की राजनीति में सरकार की नीतियों, प्रशासनिक फैसलों और विभिन्न मामलों को लेकर सत्ता पक्ष तथा विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप तेज हैं। हालिया दिनों में कुमारस्वामी ने भर्ती प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं सहित कई मुद्दों को लेकर राज्य सरकार पर सवाल उठाए हैं।

सरकार की नीतियों पर उठाते रहे हैं सवाल कुमारस्वामी ने हाल के अपने बयानों में कर्नाटक सरकार से जुड़े प्रशासनिक और राजनीतिक मामलों पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कर्नाटक लोक सेवा आयोग की भर्ती प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं को लेकर गृह मंत्री प्रियांक खड़गे के इस्तीफे की मांग भी की

थी। इन आरोपों को लेकर राजनीतिक स्तर पर प्रतिक्रिया भी सामने आई है।

इसके अलावा कुमारस्वामी बेंगलुरु के ठक्ष्ए परियोजना और भूमि से जुड़े मुद्दों को लेकर भी राज्य सरकार पर गंभीर आरोप लगा चुके हैं। उन्होंने इन आरोपों के समर्थन में दस्तावेज सार्वजनिक करने की बात कही थी। विपक्ष और सरकार के बीच बढ़ी राजनीतिक सरगर्मी कुमारस्वामी के लगातार सामने आ रहे बयानों से कर्नाटक की राजनीति में सियासी सरगर्मी बढ़ी है। जेडीएस नेता के आरोपों पर कांग्रेस नेताओं की ओर से भी प्रतिक्रियाएं सामने आती रही हैं। ऐसे में जेपी भवन में हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस को राज्य की मौजूदा राजनीतिक गतिविधियों के बीच महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

हालांकि, कुमारस्वामी द्वारा लगाए गए राजनीतिक आरोपों को संबंधित पक्षों के जवाब और उपलब्ध आधिकारिक जांच अथवा दस्तावेजों के संदर्भ में ही अंतिम तथ्य के रूप में देखा जाना चाहिए। समाचार का उद्देश्य सभी पक्षों के दृष्टिकोण को निष्पक्ष रूप से सामने रखना है।

मीडिया के सामने रखा पक्ष

प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से कुमारस्वामी ने पार्टी के दृष्टिकोण और राज्य से जुड़े मुद्दों पर अपना पक्ष मीडिया के सामने रखा। जेडीएस की ओर से सरकार की नीतियों और प्रशासनिक फैसलों पर सवाल उठाने का सिलसिला जारी है।

राज्य की राजनीति में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच चल रही इस बहस के बीच अब संबंधित मुद्दों पर सरकार तथा अन्य राजनीतिक दलों की प्रतिक्रियाओं पर भी नजर रहेगी।

1 सितंबर से लिंगसुगुर से BJP का मार्चः विजयेंद्र

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। कर्नाटक भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने स्पष्ट किया कि पार्टी का प्रस्तावित मार्च 1 सितंबर से लिंगसुगुर से शुरू होगा। उन्होंने कहा कि मार्च को लेकर किसी प्रकार का भ्रम नहीं है। उनके अनुसार, मार्च में पूर्व मंत्री बी. नागेंद्र के इस्तीफे सहित करीब 8 से 10 प्रमुख मुद्दों को उठाया जाएगा। मल्लेश्वरम स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय जगन्नाथ भवन में मीडिया से बातचीत करते हुए विजयेंद्र ने कहा कि उन्होंने इस संबंध में पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं से चर्चा की है। उन्होंने यह भी बताया कि विपक्ष के नेता आर. अशोक की मौजूदगी में उन्होंने केंद्रीय मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी से मार्च को लेकर बातचीत की थी। विजयेंद्र ने कहा कि वह कुमारस्वामी से एक बार फिर बात करेंगे और यदि कोई गलतफहमी है तो उसे दूर किया जाएगा।

नागेंद्र का इस्तीफा कई मुद्दों में से एक विजयेंद्र ने कहा कि नागेंद्र का इस्तीफा मार्च के कई मुद्दों में से केवल एक है। उन्होंने कहा कि पार्टी एसईपी, टीएसपी, आरक्षण, सूखा, उत्तर कर्नाटक के विकास की कमी और अन्य मुद्दों को

लेकर सरकार के समक्ष अपनी मांगें रखेगी।

KPSC मामले में निष्पक्ष जांच की मांग

KPSC से जुड़े मामले में एक आईएएस अधिकारी की गिरफ्तारी और जांच के संबंध में विजयेंद्र ने कहा कि मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए और सच्चाई सामने आनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जांच किसी व्यक्ति की स्थिति या प्रभाव से प्रभावित नहीं होनी चाहिए तथा यदि कोई जिम्मेदार है तो उसके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए।

आरक्षण और दलित हितों पर कांग्रेस से सवाल

विजयेंद्र ने आरक्षण और अनुसूचित जाति-जनजाति से जुड़े मुद्दों को लेकर कांग्रेस सरकार पर सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार के कार्यकाल में एससी-एसटी के लिए आरक्षण बढ़ाया गया था, जबकि कांग्रेस सरकार के सत्ता में आने के बाद इसमें कमी की गई।

उन्होंने एसईपी और टीएसपी की राशि के कथित दुरुपयोग का मुद्दा भी उठाते हुए सरकार से जवाब मांगा। विजयेंद्र ने कहा कि दलित और आदिवासी समुदाय से जुड़े कल्याणकारी धन के इस्तेमाल में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए।

185 करोड़ रुपये वापस करने की मांग

विजयेंद्र ने वाल्मीकि विकास निगम से जुड़े कथित वित्तीय अनियमितता के मामले का उल्लेख करते हुए कहा कि गलत तरीके से इस्तेमाल किए गए ?185 करोड़ निगम को वापस किए जाने चाहिए। उन्होंने इस संबंध में सरकार से स्पष्ट कार्रवाई की मांग की।

2.5 लाख युवाओं को रोजगार देने की मांग भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कांग्रेस सरकार के चुनावी वादों का उल्लेख करते हुए राज्य के युवाओं के लिए 2.5 लाख रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने अपने रोजगार संबंधी वादे को पूरा नहीं किया है।

विजयेंद्र ने उत्तर कर्नाटक में विकास की कमी, सूखे की स्थिति और सिंचाई से जुड़े मुद्दों को भी मार्च के प्रमुख विषयों में शामिल बताया। उन्होंने कोप्पल-होसपेट क्षेत्र में समानांतर तालाब से जुड़े प्रस्ताव को लागू करने की मांग भी रखी। भाजपा के अनुसार, इन सभी मुद्दों को लेकर प्रस्तावित मार्च 1 सितंबर से लिंगसुगुर से शुरू होगा। पार्टी ने इसे राज्य सरकार के समक्ष विभिन्न जनहित से जुड़े मुद्दों को उठाने का माध्यम बताया है। समाचार में शामिल राजनीतिक आरोप संबंधित नेता के बयानों पर आधारित हैं। इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं की गई है। संबंधित कांग्रेस नेताओं या राज्य सरकार का पक्ष उपलब्ध होने पर उसे भी शामिल किया जाना उचित होगा।

शिवराम पेट में रक्षासूत्र से गूंजा एकता का संदेश

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

मैसूरु, 30 अगस्त 2026। शिवराम पेट वसति में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से रक्षाबंधन उत्सव उत्साह और सामाजिक सद्भाव के वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम में स्वयंसेवकों तथा समाजजनों ने एक-दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर भाईचारे, सामाजिक समरसता और एकता का संदेश दिया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने रक्षाबंधन पर्व के सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व पर विचार व्यक्त किए। वक्ताओं ने कहा कि ऐसे आयोजन समाज में आपसी विश्वास, सहयोग और सद्भाव को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम के दौरान भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं के संरक्षण तथा समाज को संगठित और सशक्त बनाने का संकल्प लिया गया। उपस्थित लोगों ने राष्ट्रहित और सामाजिक एकजुटता के लिए मिलकर कार्य करने की प्रतिबद्धता भी व्यक्त की। उत्सव के दौरान स्वयंसेवकों और समाजजनों में उत्साह का माहौल रहा तथा सभी ने पारस्परिक सौहार्द के साथ रक्षाबंधन पर्व मनाया।

दशलक्षण धर्म को जीवन में उतारेंः मुनि वीरसागर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। दशलक्षण महापर्व के अवसर पर निर्यापक श्रमण मुनि श्री 108 वीरसागर जी महाराज ने श्रद्धालुओं से धर्म के बाहरी स्वरूप से आगे बढ़कर आत्मशुद्धि, संयम और समता को जीवन में अपनाने का आान किया। उन्होंने कहा कि धर्म केवल पूजा-पाठ, व्रत, उपवास और धार्मिक आयोजनों तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मा के शुद्ध स्वभाव की ओर लौटने की साधना है। दशलक्षण धर्म के व्यावहारिक स्वरूप को जानें विषय पर प्रवचन करते हुए मुनि श्री ने जैन दर्शन के सूत्र धम्मो वत्थु सहावो का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि धर्म वस्तु का स्वभाव है और आत्मा का स्वभाव ज्ञान, दर्शन एवं शुद्ध चेतना है। इसलिए धार्मिक साधना का उद्देश्य बाहरी प्रदर्शन नहीं, बल्कि अपने आचरण और भावों में सकारात्मक परिवर्तन लाना होना चाहिए। उन्होंने कहा कि अत्यधिक धार्मिक गतिविधियां तभी सार्थक हैं, जब उनसे व्यक्ति के भीतर क्रोध, अहंकार, छल, लोभ, असंयम और ममत्व जैसी प्रवृत्तियां कम हों तथा शांति, विनम्रता और आत्म-जागरूकता बढ़े। दस धर्मों का व्यावहारिक संदेश मुनि श्री वीरसागर जी ने दशलक्षण धर्म के प्रत्येक गुण को आधुनिक जीवन से जोड़ते हुए उसकी उपयोगिता समझाई। उत्तम क्षमाः उन्होंने कहा कि क्षमा मन को क्रोध और प्रतिशोध से मुक्त करने का माध्यम है। सच्ची क्षमा केवल शब्दों में माफ करना नहीं, बल्कि मन से वैर समाप्त करना है। उत्तम मार्दवः विनम्रता को आत्मबल बताते हुए उन्होंने कहा कि पद, प्रतिष्ठा और प्रशंसा का अहंकार व्यक्ति की

आध्यात्मिक प्रगति में बाधक बन सकता है। सच्ची विनम्रता व्यक्ति को भीतर से स्वतंत्र बनाती है।

उत्तम आर्जवः उन्होंने मन, वचन और व्यवहार में सरलता तथा निष्कपटता अपनाने पर जोर दिया। उनके अनुसार छल-कपट मन को जटिल बनाता है, जबकि सरलता आत्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। उत्तम शौचः मुनि श्री ने लोभ को मानसिक अशांति का प्रमुख कारण बताते हुए आवश्यकताओं और इच्छाओं के बीच अंतर समझने की बात कही। संतोष, संयम और साझा करने की भावना को आंतरिक पवित्रता का आधार बताया। उत्तम सत्यः उन्होंने कहा कि सत्य केवल झूठ से बचना नहीं है। वाणी में कटुता, अपमान और अनावश्यक चोट से बचना भी सत्य धर्म का महत्वपूर्ण पक्ष है। सत्य के साथ शांति और सद्भाव भी होना चाहिए। उत्तम संयमः इंद्रियों और आदतों पर नियंत्रण को आवश्यक बताते हुए मुनि श्री ने आधुनिक डिजिटल जीवन की ओर भी ध्यान दिलाया। उन्होंने अत्यधिक मोबाइल उपयोग और निरंतर स्क्रीन देखने जैसी आदतों पर संयम रखने का संदेश दिया। उत्तम तपः उन्होंने स्पष्ट किया कि तप केवल उपवास तक सीमित नहीं है। स्वाध्याय, ध्यान, आत्मनिरीक्षण, इच्छाओं पर नियंत्रण और अपनी भूलों को स्वीकार कर प्रायश्चित करना भी तप का महत्वपूर्ण स्वरूप है। उत्तम त्यागः मुनि श्री ने ज्ञान, औषधि, भोजन और सेवा सहित विभिन्न क्षेत्रों में सामर्थ्य के अनुसार योगदान देने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि सच्चे त्याग में देने के बाद अहंकार नहीं होना चाहिए। उत्तम आकिंचन्यः उन्होंने धन, संपत्ति, पद और अन्य वस्तुओं के प्रति अत्यधिक ममत्व को आत्मिक स्वतंत्रता में बाधक बताया। वस्तुओं का उपयोग आवश्यक है, लेकिन उनके प्रति अंधी स्वामित्व भावना से बचना चाहिए। उत्तम ब्रह्मचर्यः ब्रह्मचर्य को केवल शारीरिक संयम तक सीमित न रखते हुए उन्होंने इसे आत्मस्वरूप में स्थित होने की साधना बताया। दृष्टि, विचार और व्यवहार में मयार्दा तथा विषयासक्ति पर नियंत्रण रखने का संदेश दिया। दस दिन आत्ममंथन के अवसर

प्रवचन के समापन पर मुनि श्री वीरसागर जी महाराज ने कहा कि दशलक्षण महापर्व केवल दस दिनों तक चलने वाला धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि जीवन को आत्ममंथन की दिशा देने का अवसर है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से यह विचार करना चाहिए कि क्षमा, विनम्रता, सरलता, पवित्रता, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य जैसे गुण उसके व्यवहार में कितना परिवर्तन ला रहे हैं।

उन्होंने श्रद्धालुओं से धर्म को प्रदर्शन का विषय बनाने के बजाय आत्मकल्याण, संयम और समता की साधना के रूप में अपनाने का आान किया। समाचार प्रेषकः विपिन कुमार जैन, बेंगलुरु

बीदर दौरे पर हरिप्रसाद ने महापुरुषों को नमन किया

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बीदर, 30 अगस्त 2026। कर्नाटक के बीदर जिले के दौरे पर पहुंचे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री बी.के. हरिप्रसाद ने विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हुए महापुरुषों को श्रद्धांजलि अर्पित की। हरिप्रसाद ने जगज्योति बसवेश्वर और संविधान निमार्ता डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर की प्रतिमाओं पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर

उन्होंने सामाजिक समानता, भाईचारे और जनकल्याण के मूल्यों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

दौरे के दौरान हरिप्रसाद ने बीदर स्थित ऐतिहासिक गुरुद्वारे का भी दौरा किया। उन्होंने गुरुद्वारे में मत्था टेककर देश और प्रदेश की शांति, समृद्धि तथा जनता के कल्याण के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर पूर्व मंत्री एवं विधायक रहीम खान, पूर्व विधान परिषद सदस्य अरविंद कुमार अराली सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

नितिन नवीन का बेंगलुरु में गर्मजोशी से स्वागत

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के बेंगलुरु पहुंचने पर भाजपा के कर्नाटक प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। नितिन नवीन निजी दौरे पर बेंगलुरु पहुंचे हैं।

इस अवसर पर भाजपा के कर्नाटक प्रदेश सह-प्रभारी सुधाकर रेड्डी भी मौजूद रहे। प्रदेश भाजपा नेताओं ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के आगमन पर उनका स्वागत किया।

बताया गया कि नितिन नवीन का यह दौरा निजी यात्रा के उद्देश्य से है। इस दौरान प्रदेश भाजपा नेतृत्व की ओर से उनका स्वागत किया गया।

गौभजनों से गूंजा ओंकार हिल्स

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। श्री ओंकारेश्वर गो सेवा प्रतिष्ठान (रजि.) की ओर से गौवंश की सेवा, संरक्षण और गौशाला विकास के उद्देश्य से ओंकार हिल्स, श्रीनिवासपुरा, केंगेरी-उत्तरहल्ली रोड पर एक शाम गौमाता के नाम विशाल भजन संध्या एवं जागरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गौभक्त, सनातन धर्मप्रेमी, समाजसेवी और समाजबंधु शामिल हुए। देर रात तक चले भक्ति कार्यक्रम में भजनों और गौमाता के जयकारों से आयोजन स्थल भक्तिमय बना रहा। प्रसिद्ध भजन कलाकार एवं गौभक्त डॉ. ओमजी मुंडेल ने भजनों की प्रस्तुतियां दीं। उनकी प्रस्तुतियों पर

श्रद्धालु भक्ति भाव में झूमते नजर आए।

गौसेवा को बताया सामूहिक जिम्मेदारी कार्यक्रम में वक्ताओं ने भारतीय संस्कृति में गौवंश के महत्व पर प्रकाश डालते हुए गौसेवा और संरक्षण के लिए समाज के सभी वर्गों से सहयोग का आान किया। आयोजकों ने कहा कि गौशाला में गौवंश के लिए आश्रय स्थल एवं शेड निर्माण का कार्य प्रगति पर है और इसे बेहतर सुविधाओं से विकसित करने के लिए समाज के सहयोग की आवश्यकता है। इस दौरान श्रद्धालुओं से गौसेवा के कार्य में यथासंभव सहयोग करने की अपील की गई। उपस्थित गौभक्तों एवं समाजबंधुओं ने इस सेवा अभियान से जुड़ने की भावना व्यक्त की।

गौसंरक्षण को लेकर दिया संदेश भजन संध्या के दौरान वक्ताओं ने गौसंरक्षण को लेकर जनजागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यक्रम में गौमाता को राष्ट्रमाता घोषित करने की मांग से जुड़ा संदेश भी रखा गया। वक्ताओं ने कहा कि गौवंश भारतीय संस्कृति और ग्रामीण जीवन की परंपरा से लंबे समय से जुड़ा रहा है तथा युवा पीढ़ी को सेवा एवं संस्कारों से जोड़ना आवश्यक है। गणमान्यजनों की रही उपस्थिति कार्यक्रम में समाजसेवी एवं उद्योगपति प्रकाशजी चौहान, गौभक्त बाबूसिंह राजपुरोहित मोहराई सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथियों में भक्तराज दिलीपजी सोनी, गौभक्त महेंद्रजी मुणोत, रमेशकुमार चौधरी नीरोवा शक्त, मंकनसिंह राजपुरोहित टुकलिया, समाजसेवी एवं गौभक्त सुरेशजी सेणचा तथा बालुसिंह राजपुरोहित सहित अन्य समाजबंधु शामिल हुए। कार्यक्रम का मंच संचालन रुपेश सोलंकी, बेंगलुरु ने किया। श्रद्धालुओं के लिए प्रसादी की व्यवस्था भी की गई, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने प्रसादी ग्रहण की। श्री ओंकारेश्वर गो सेवा प्रतिष्ठान के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं ने आयोजन में सहयोग देने वाले अतिथियों, भजन कलाकारों, गौभक्तों, समाजबंधुओं और श्रद्धालुओं के प्रति आभार व्यक्त किया। आयोजकों ने कहा कि गौसेवा एवं गौसंरक्षण के कार्य को आगे भी निरंतर जारी रखते हुए गौशाला में गौवंश के लिए आवश्यक सुविधाओं के विकास पर कार्य किया जाएगा। समाचार प्रेषकः दलपतसिंह भायल, बेंगलुरु

जन्माष्टमी पर मथुरा को 446 करोड़ की सौगात

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

मथुरा, 30 अगस्त 2026। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर मथुरा-वृंदावन क्षेत्र को विकास परियोजनाओं की बड़ी सौगात मिलने जा रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद और मथुरा-वृंदावन विकास प्राधिकरण की कुल 42 परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण करेंगे। इन परियोजनाओं की कुल लागत करीब 446.09 करोड़ रुपये बताई गई है। प्रस्तावित कार्यक्रम के तहत 263.69 करोड़ रुपये की 19 परियोजनाओं का शिलान्यास तथा 182.39 करोड़ रुपये की लागत से पूर्ण 23 परियोजनाओं का लोकार्पण किया जाएगा। इन परियोजनाओं में धार्मिक पर्यटन, यात्री सुविधाओं, सड़क, प्रकाश व्यवस्था, सुंदरीकरण और स्थानीय हस्तशिल्प को बढ़ावा देने से जुड़े कार्य शामिल हैं। पर्यटन और धार्मिक स्थलों का विकास ब्रज तीर्थ विकास परिषद की सीईओ एवं मथुरा-

वृंदावन विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष लक्ष्मी नागप्पन के अनुसार, प्रस्तावित परियोजनाओं में गोवर्धन तहसील के ऊंचागांव में सखीगिरी पर्वत के करीब 30 हेक्टेयर वन क्षेत्र का ईको-रेस्टोरेशन, महावन के प्रेमनगर स्थित बौद्ध विहार परिसर में पर्यटक सुविधाओं का विकास और शेरगढ़ स्थित श्री दाऊजी मंदिर परिसर का संरक्षण शामिल है।

इसके अलावा शेरगढ़ में पंडाल, पार्किंग और सुलभ प्रसाधन सुविधाएं तथा फरह के दीनदयाल धाम में पर्यटन अवस्थापना केंद्र विकसित करने की योजना है। सड़कों और यात्री सुविधाओं पर जोर वृंदावन परिक्रमा मार्ग के भवनों में फसाड लाइटिंग, सुंदरीकरण एवं साइनेज तथा गोवर्धन में पर्यटन सुविधाओं के विकास से जुड़े कार्य भी प्रस्तावित हैं। विकास प्राधिकरण की प्रमुख परियोजनाओं में छाता क्षेत्र में 30 मीटर चौड़ी मास्टर प्लान सड़क, छटीकरा-वृंदावन मार्ग का सुंदरीकरण, मथुरा कट से टैंक चौराहा मार्ग का सुंदरीकरण तथा लक्ष्मी नगर तिराहे से कृष्णापुरी तिराहे तक सड़क का उच्चीकरण शामिल है। बरसाना परिक्रमा मार्ग पर पार्किंग एवं पर्यटक सुविधाओं के विकास के साथ श्रीकृष्ण जन्मस्थान के आसपास की गलियों और मार्गों पर स्ट्रीट फसाड विकसित करने की भी योजना है।

पूर्ण परियोजनाओं का होगा लोकार्पण ब्रज तीर्थ विकास परिषद की पूर्ण परियोजनाओं में अकबरपुर जैत में टूरिस्ट फैसिलिटेशन सेंटर, करहला में वज्रनाभ समाधि का पुनरुद्धार एवं सुंदरीकरण, वृंदावन के सुनरख में सौभरि ऋषि वाटरबॉडी का सुंदरीकरण तथा नौहझील के झाड़ी वाले हनुमान मंदिर में श्रद्धालुओं के लिए सुविधाओं का विकास शामिल है।

पानीगांव स्थित यमुना पुल पर फसाड लाइटिंग, मथुरा परिक्रमा मार्ग का नवीनीकरण एवं विकास, विभिन्न भाषाओं में साइनेज बोर्ड, गीता शोध संस्थान और रासलीला अकादमी में गेस्ट हाउस तथा यमुना एक्सप्रेस-वे से पागल बाबा मंदिर-वृंदावन मार्ग पर नया प्रवेश द्वार भी लोकार्पित होने वाली परियोजनाओं में शामिल बताए गए हैं। हस्तशिल्प को भी मिलेगा बढ़ावा

विकास प्राधिकरण की परियोजनाओं में केशीघाट पर फसाड लाइटिंग, वृंदावन कुंभ मेला मैदान में श्रद्धालुओं के लिए शेड तथा बरसाना में यात्री शेड, वाटर प्वाइंट, होल्डिंग एरिया और शौचालय जैसी सुविधाएं शामिल हैं। इसके अलावा विश्व बैंक सहायतित प्रो-पुअर पर्यटन विकास परियोजना के तहत सीएलटी सेंटर, इंटीग्रेटेड फ्लावर मैनेजमेंट सेंटर, आर्टिजन सेंटर फॉर कृष्णा पोशाक तथा जैंत में मॉडल आर्टिजन विलेज जैसी परियोजनाएं भी शामिल हैं। अधिकारियों के अनुसार, इन परियोजनाओं के पूरा होने से मथुरा-वृंदावन सहित ब्रज क्षेत्र के अन्य धार्मिक स्थलों पर धार्मिक पर्यटन और श्रद्धालुओं की सुविधाओं को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। साथ ही सड़क एवं प्रकाश व्यवस्था, क्षेत्र के सुंदरीकरण और स्थानीय हस्तशिल्प से जुड़ी गतिविधियों को भी गति मिलने की संभावना है।

पहली बार मदुरै में निकलेगी कावड़ यात्रा

पंचमुखी हनुमान मंदिर से शिवन कोविल तक गूंजेगा हर हर महादेव का जयघोष

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

मदुरै, 30 अगस्त 2026। भगवान शिव की आराधना और श्रद्धा को समर्पित भव्य कावड़ यात्रा का आयोजन रविवार रात मदुरै में पहली बार किया जा रहा है। यात्रा का शुभारंभ रविवार देर रात 12 बजे पंचमुखी हनुमान मंदिर प्रांगण से होगा। आयोजकों के अनुसार यात्रा में बड़ी संख्या में शिवभक्तों के कावड़ लेकर शामिल होने की संभावना है।

प्रवासी समाज प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि मदुरै में पहली बार आयोजित होने वाली इस कावड़ यात्रा को लेकर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह है। यात्रा में शामिल श्रद्धालु भगवान महादेव का जलाभिषेक और पूजा-अर्चना करेंगे।

अलगर कोविल क्षेत्र से शिव मंदिर तक यात्रा आयोजकों के अनुसार कावड़ यात्रा अलगर कोविल क्षेत्र से होकर मदुरै स्थित इननम्मै थरुवर शिवन मंदिर पहुंचेगी। यहां भगवान शिव का जलाभिषेक एवं पूजा-अर्चना के बाद यात्रा का समापन होगा। यात्रा के दौरान श्रद्धालु हर हर महादेव और बम बम भोले के जयघोष करते हुए आगे बढ़ेंगे। इससे यात्रा मार्ग पर भक्तिमय वातावरण बनने की उम्मीद है। व्यवस्थाओं को दिया अंतिम रूप आयोजकों ने बताया कि यात्रा की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। श्रद्धालुओं से निर्धारित समय पर पहुंचने तथा यात्रा के दौरान अनुशासन और श्रद्धाभाव बनाए रखने की अपील की गई है।

यात्रा की तैयारियों में शंकर सिंह राजपुरोहित, विक्रम प्रजापत, रमेशकुमार चौधरी, अशोक प्रजापत, भंवरलाल घांची और भागाराम प्रजापत सहित मदुरै के विभिन्न समाजों के कार्यकताओं का सहयोग रहा है। कार्यकताओं ने यात्रा को व्यवस्थित एवं सफल बनाने के लिए आवश्यक तैयारियां पूरी की हैं। भक्ति के साथ सामाजिक एकता का संदेश मदुरै में पहली बार आयोजित हो रही यह कावड़ यात्रा धार्मिक आस्था के साथ सेवा, श्रद्धा और सामाजिक एकता का संदेश देने वाली पहल के रूप में देखी जा रही है। आयोजन को लेकर प्रवासी समाज और शिवभक्तों में उत्साह है। समाचार प्रेषकः दिनेश सालेचा, मदुरै।

कर्नाटक में बारिश के लिए क्लाउड सीडिंग की तैयारी

निगरानी और तकनीकी मार्गदर्शन के लिए दो समितियां गठित, 28.52 करोड़ रुपये का प्रावधान

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों में सामान्य से कम मानसूनी बारिश को देखते हुए राज्य सरकार ने वर्षा की कमी और संभावित सूखे की स्थिति से निपटने के लिए क्लाउड सीडिंग कार्यक्रम को गति देने की तैयारी की है। कार्यक्रम की निगरानी, वैज्ञानिक प्रबंधन और तकनीकी मार्गदर्शन के लिए सरकार ने दो अलग-अलग समितियों का गठन किया है। सरकार की ओर से जारी आदेश के अनुसार इन समितियों का उद्देश्य क्लाउड सीडिंग कार्यक्रम को व्यवस्थित तरीके से लागू करना, इसके कामकाज की निगरानी करना तथा जरूरत वाले क्षेत्रों में कार्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन करना है। निगरानी समिति करेगी कार्यक्रम की समीक्षा

क्लाउड सीडिंग कार्यक्रम की समग्र निगरानी और समीक्षा के लिए गठित समिति के अध्यक्ष सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं विकास आयुक्त होंगे। समिति में जल संसाधन, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज तथा कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं। समिति में जल संसाधन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव, राजस्व विभाग के आपदा प्रबंधन प्रभाग के प्रधान सचिव, ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज विभाग के सचिव, कृषि विभाग के सचिव, जल संसाधन विभाग के सचिव तथा कर्नाटक स्टेट नेचुरल डिजास्टर मॉनिटरिंग सेंटर (KSNDMC) के प्रबंध निदेशक सदस्य होंगे।

कर्नाटक सिंचाई निगम लिमिटेड (KNNL) के प्रबंध निदेशक को सदस्य सचिव की जिम्मेदारी दी गई है। तकनीकी समिति देगी वैज्ञानिक सलाह

कार्यक्रम के तकनीकी पहलुओं के लिए अलग से तकनीकी सलाहकार एवं मूल्यांकन समिति गठित की गई है। यह समिति KSNDMC को क्लाउड सीडिंग से संबंधित तकनीकी मामलों में सहयोग, मार्गदर्शन और सुझाव देगी। समिति की अध्यक्षता KSNDMC के निदेशक करेंगे। इसमें कृषि विभाग, भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), कर्नाटक स्टेट रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर तथा भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) से जुड़े विशेषज्ञों के अलावा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मेटियोरोलॉजी (IITM), पुणे और कर्नाटक राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रतिनिधि शामिल होंगे। डॉ. संजीव संगमी, सदस्य सचिव एवं मालाप्रभा प्रोजेक्ट जोन (KNNL) के मुख्य अभियंता को समिति में शामिल किया गया है। जैन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बेलगावी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रमुख को विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में शामिल किया गया है। 28.52 करोड़ रुपये का प्रावधान सरकार ने क्लाउड सीडिंग कार्यक्रम के लिए 28.52 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। आदेश के अनुसार अनुमानित राशि पर, जीएसटी को छोड़कर, प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। कार्यक्रम को जल संसाधन विभाग के कर्नाटक सिंचाई निगम लिमिटेड (KNNL) और राजस्व विभाग के कर्नाटक स्टेट नेचुरल डिजास्टर मैनेजमेंट सेंटर (KSNDMC) के समन्वय से लागू किया जाएगा। क्लाउड सीडिंग सेवा की खरीद मैसर्स क्याथी क्लाइमेट मॉडिफिकेशन कंसल्टेंट्स एलएलपी के माध्यम से किए जाने का निर्णय लिया गया है। सरकारी आदेश में इस खरीद को कर्नाटक ट्रांसपेरेंसी इन पब्लिक प्रोक्योरमेंट (KTPP) अधिनियम के प्रावधानों से छूट दिए जाने का भी उल्लेख है। वैज्ञानिक निगरानी पर रहेगा जोर क्लाउड सीडिंग का उद्देश्य अनुकूल वायुमंडलीय परिस्थितियों में बादलों से वर्षा की संभावना बढ़ाने का प्रयास करना है। हालांकि इसकी सफलता मौसम संबंधी परिस्थितियों पर निर्भर करती है। ऐसे में सरकार द्वारा गठित तकनीकी समिति की भूमिका कार्यक्रम के वैज्ञानिक मूल्यांकन और निगरानी के लिहाज से महत्वपूर्ण होगी। राज्य में बारिश की कमी वाले क्षेत्रों में जल उपलब्धता और सूखे की संभावित चुनौती के बीच सरकार के इस कदम पर अब कार्यक्रम के वास्तविक क्रियान्वयन और उसके परिणामों पर नजर रहेगी।

जी इन्सॉल्वेंसी केस में 99.97% हेयरकट पर उठे सवाल

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। जी समूह के संस्थापक सुभाष चंद्रा से जुड़े बताए जा रहे एक इन्सॉल्वेंसी मामले में कथित तौर पर करीब ?22,006 करोड़ के दावे में 99.97 प्रतिशत तक की कमी किए जाने के मुद्दे को लेकर विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारियों ने इस मामले में केंद्र सरकार और संबंधित वित्तीय संस्थानों से पूरी जानकारी सार्वजनिक करने तथा प्रक्रिया की स्वतंत्र जांच कराने की मांग की।

प्रदर्शनकारियों का कहना है कि यदि दावे की इतनी बड़ी राशि में कमी अथवा सेटलमेंट हुआ है, तो इसकी प्रक्रिया, आधार और संबंधित वित्तीय संस्थानों की भूमिका को सार्वजनिक किया जाना चाहिए। उन्होंने सवाल उठाया कि बड़े कॉर्पोरेट ऋण मामलों में इतनी बड़ी कटौती किन परिस्थितियों में स्वीकार की जाती है और क्या इससे क्रेडिटर्स तथा सार्वजनिक धन के हित पर्याप्त रूप से सुरक्षित रहे हैं। प्रदर्शनकारियों ने केंद्र सरकार और वित्त मंत्रालय से मामले से जुड़े आवश्यक तथ्यों को स्पष्ट करने की मांग की। उनका कहना है कि आम नागरिक या किसान ऋण चुकाने में असमर्थ होने पर वसूली प्रक्रिया, क्रेडिट रिकॉर्ड पर असर और अन्य वित्तीय कठिनाइयों का सामना करता है। ऐसे में बड़े कॉर्पोरेट ऋण और इन्सॉल्वेंसी मामलों में होने वाले बड़े हेयरकट को लेकर पारदर्शिता जरूरी है। प्रदर्शनकारियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से भी इस मामले में उठाए जा रहे सवालों पर स्पष्टीकरण देने की मांग की। उन्होंने कहा कि संबंधित दावे, सेटलमेंट अथवा रिजॉल्यूशन की प्रक्रिया तथा वित्तीय संस्थानों की भूमिका के बारे में तथ्य सार्वजनिक किए जाने चाहिए।

प्रदर्शनकारियों ने कथित बड़े हेयरकट को मंजूरी दिए जाने की परिस्थितियों की स्वतंत्र और पारदर्शी जांच की मांग की। साथ ही कहा कि यदि जांच में किसी प्रकार की अनियमितता या भ्रष्टाचार सामने आता है, तो नियमानुसार जिम्मेदारी तय कर कार्रवाई की जानी चाहिए। हालांकि, प्रदर्शन के दौरान लगाए गए आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि इस समाचार में नहीं की जा रही है। किसी भी वित्तीय दावे, हेयरकट या इन्सॉल्वेंसी प्रक्रिया का अंतिम आकलन संबंधित आधिकारिक दस्तावेजों और सक्षम प्राधिकरणों के रिकॉर्ड के आधार पर ही किया जा सकता है।

प्रदर्शन में ये लोग रहे शामिल प्रदर्शन में KPCC महासचिव एस. मनोहर, सुधाकर राव, आदित्य, उमेश, पुट्टाराजू, कुशल हारुवे गौड़ा, माधव हनूर, साई नवीन, किशोर, प्रवीण और शाहीन शरीफ सहित अन्य लोग मौजूद रहे। प्रदर्शनकारियों ने केंद्र सरकार से मामले से जुड़े तथ्यों को सार्वजनिक कर पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने की मांग दोहराई।

रेलवे में 1599 अप्रेंटिस पद, 10वीं-IT कवालों को मौका

बिना लिखित परीक्षा मेरिट से चयन, 15 सितंबर तक आवेदन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

भुवनेश्वर, 30 अगस्त 2026। भारतीय रेलवे में अप्रेंटिस बनने की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए महत्वपूर्ण अवसर है। ईस्ट कोस्ट रेलवे के रेलवे भर्ती सेल, भुवनेश्वर ने वर्ष 2026-27 के लिए 1599 एक्ट अप्रेंटिस पदों पर भर्ती की अधिसूचना जारी की है। आधिकारिक वेबसाइट पर आवेदन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और निर्धारित समयसीमा के भीतर योग्य अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इस भर्ती की खास बात यह है कि अप्रेंटिस पदों पर चयन के लिए अलग से लिखित परीक्षा आयोजित नहीं की जाएगी। चयन निर्धारित नियमों के अनुसार मेरिट के आधार पर किया जाएगा।

10वीं के साथ कळकजरूरी अभ्यर्थी का किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ 10वीं कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इसके साथ संबंधित ट्रेड में NCVT या SCVT से मान्यता प्राप्त ITI प्रमाणपत्र भी जरूरी है।

भर्ती में फिटर, वेल्डर, इलेक्ट्रीशियन, टर्नर, मशीनिस्ट, प्लंबर सहित विभिन्न ट्रेडों से जुड़े पद शामिल हैं। अभ्यर्थियों को आवेदन से पहले आधिकारिक अधिसूचना में अपने ट्रेड और संबंधित पात्रता की जांच करने की सलाह दी गई है। 15 से 24 वर्ष आयु सीमा

आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों की आयु निर्धारित कटऑफ तिथि के अनुसार 15 से 24 वर्ष के बीच होनी चाहिए। आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों को सरकारी नियमों के अनुसार अधिकतम आयु सीमा में छूट का प्रावधान है। 10वीं और ITI के अंकों से बनेगी मेरिट अप्रेंटिस भर्ती में उम्मीदवारों की मेरिट 10वीं और ITI में प्राप्त अंकों के आधार पर तैयार की जाएगी। इसलिए अभ्यर्थियों को आवेदन पत्र में शैक्षणिक योग्यता से संबंधित विवरण और दस्तावेज सावधानीपूर्वक दर्ज करने होंगे।

आवेदन शुल्क भर्ती नियमों के अनुसार सामान्य श्रेणी के अभ्यर्थियों के लिए निर्धारित आवेदन शुल्क लागू होगा, जबकि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, दिव्यांग और महिला अभ्यर्थियों को शुल्क में छूट दी गई है। आवेदन शुल्क एवं अन्य शर्तों की अंतिम पुष्टि आधिकारिक अधिसूचना से करना आवश्यक है। 15 सितंबर तक आवेदन का मौका आधिकारिक भर्ती सूचना के अनुसार ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 26 अगस्त 2026 से शुरू हुई है। अभ्यर्थी 15 सितंबर 2026 तक निर्धारित समय के भीतर आवेदन कर सकते हैं। रेलवे भर्ती सेल ने अभ्यर्थियों को अंतिम समय में तकनीकी परेशानी से बचने के लिए समय रहते आवेदन करने की सलाह दी है। आवेदन कैसे करें इच्छुक अभ्यर्थी रेलवे भर्ती सेल, भुवनेश्वर की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर अू३ अस्त्रस्त्र१ल्लश्ची 2026-27 भर्ती लिंक खोलें। इसके बाद पंजीकरण कर आवश्यक शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत विवरण भरें, दस्तावेज अपलोड करें और लागू शुल्क का भुगतान कर आवेदन जमा करें। आवेदन जमा करने के बाद उसका प्रिंट या डिजिटल प्रति सुरक्षित रखना उपयोगी रहेगा। अभ्यर्थियों को भर्ती से संबंधित संशोधन, मेरिट सूची और आगे की प्रक्रिया के लिए आधिकारिक वेबसाइट पर नियमित नजर रखने की सलाह दी गई है। महत्वपूर्णः अप्रेंटिस भर्ती में चयन का अर्थ रेलवे में नियमित सरकारी नौकरी की नियुक्ति नहीं होता। अभ्यर्थियों को आवेदन करने से पहले आधिकारिक अधिसूचना में प्रशिक्षण, स्टाइपेंड, दस्तावेज सत्यापन और अन्य शर्तों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।

आधिकारिक वेबसाइटः रेलवे भर्ती सेल, भुवनेश्वर (https://reference-url-citation.invalid/3)

सरस्वती जाप अनुष्ठान श्रद्धा से सम्पन्न

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में पूज्य गुरुदेव श्री मलयप्रभ सागर जी म. सा. की निश्रा एवं पूज्य साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजना श्री जी म. सा. के सान्निध्य में सरस्वती जाप अनुष्ठान श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ सम्पन्न हुआ। आयोजन के दौरान श्रद्धालुओं ने ज्ञान, विवेक एवं सद्बुद्धि की मंगलकामना के साथ जाप में भाग लिया।

ट्रस्ट अध्यक्ष तेजराज मालानी ने बताया कि ज्ञान की देवी सरस्वती को जैन परंपरा में श्रुतदेवी के रूप में श्रद्धापूर्वक पूजा जाता है। उन्होंने कहा कि ज्ञान और विवेक के प्रति आस्था को समर्पित यह आयोजन श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक अनुभूति का अवसर रहा।

ट्रस्ट महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा ने बताया कि शाम पांच बजे तक प्रति घंटे सौ से अधिक सदस्यों ने सरस्वती जाप में सहभागिता की। जाप में शामिल सदस्यों को रक्षा पोटली, वासक्षेप एवं सरस्वती माता कवच उपहार स्वरूप प्रदान किए गए।

अनुष्ठान के दौरान श्रीमती शांतिदेवी पुखराज जी तेजराज जी गुलेच्छा परिवार की ओर से विधिवत सरस्वती माता की स्थापना की गई। सरस्वती माता को खीर अर्पित कर आरती की गई। वहीं श्रीमती उमादेवी रमेशकुमार जी सांखला परिवार की ओर से सरस्वती माता की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। कार्यक्रम की व्यवस्था एवं संचालन श्री जिनदत्त कुशल सूरी जैन सेवा एवं संगीत मंडल द्वारा किया गया। मंडल के सनी रांका, राजेन्द्र गुलेच्छा सहित सदस्यों ने सरस्वती वंदना गीत प्रस्तुत किए। भक्ति गीतों के दौरान आयोजन स्थल पर धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण बना रहा।

ट्रस्ट के ललित डाकलिया ने बताया कि श्रद्धालुओं ने भक्तिभावपूर्वक सरस्वती जाप में हिस्सा लेकर ज्ञान, विवेक और सद्बुद्धि की कामना की। आयोजन को सफल बनाने में ट्रस्ट, सेवा एवं संगीत मंडल के सदस्यों तथा श्रद्धालुओं का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर ट्रस्ट अध्यक्ष तेजराज मालानी, उपाध्यक्ष तनसुख राज गुलेच्छा, कोषाध्यक्ष रनजीत ललवानी, सहमंत्री धर्मेन्द्र संकलेचा, मोतीलाल ललवानी, पुखराज कवाड़ सहित दादावाड़ी ट्रस्ट एवं उससे जुड़ी संस्थाओं के पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित रहे। समाचार प्रेषकः ललित डाकलिया, बेंगलुरु

मोदी के 25 सालः सेवा अभियान का ऐलान

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। भारतीय जनता पार्टी के कर्नाटक प्रदेश अध्यक्ष

बी.वाई. विजयेंद्र ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन में 25 वर्षों की सेवा और प्रशासनिक कार्यकाल को लेकर राज्यभर में एक महीने तक विभिन्न सेवा गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। अभियान की शुरूआत 17 सितंबर से किए जाने की योजना है। मल्लेश्वरम स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय जगन्नाथ भवन में मीडिया से बातचीत करते हुए विजयेंद्र ने कहा कि अभियान के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी के कार्यों और उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने बताया कि विभिन्न सेवा गतिविधियों के साथ आंगनवाड़ी केंद्रों में कार्यक्रम आयोजित करने तथा आशीर्वाद दीप जलाने की भी योजना है।

उन्होंने कहा कि अभियान के दौरान प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश में हुए विकास कार्यों और वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को जनता के बीच रखने का प्रयास किया जाएगा। इस उद्देश्य से भाजपा की ओर से विशेष कार्यशाला भी आयोजित की गई। भाजपा के कर्नाटक सह-प्रभारी सुधाकर रेड्डी ने बताया कि अभियान की तैयारियों को लेकर आयोजित कार्यशाला में महाराष्ट्र सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं सांस्कृतिक कार्य मंत्री आशीष शेलार ने मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि 17 सितंबर से शुरू होने वाले अभियान को राज्यभर में प्रभावी ढंग से संचालित करने की तैयारी की जा रही है।

भाजपा नेताओं के अनुसार, एक महीने तक चलने वाले इस अभियान में सेवा, जनसंपर्क और प्रधानमंत्री मोदी के विकास संबंधी दृष्टिकोण को प्रमुखता दी जाएगी।

खेतेश्वर दाता के भजनों में झूमी मदुरै

विशाल भजन संध्या एवं रात्रि जागरण में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, जयकारों से गूंजा परिसर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

मदुरै, 30 अगस्त 2026। मंदिरों की नगरी मदुरै में श्री 1008 खेतेश्वर दाता के नाम विशाल भजन संध्या एवं रात्रि जागरण का आयोजन श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ सम्पन्न हुआ। मदुरै समस्त राजपुरोहित समाज के तत्वावधान में श्री लीला देवी भवन में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने परिवार सहित भाग लेकर धार्मिक आयोजन का आनंद लिया।

प्रवासी समाज प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि कार्यक्रम में विभिन्न समाजों के श्रद्धालुओं के साथ राजपुरोहित समाज के लोग भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। भजन कलाकार नरसिंह राजपुरोहित एंड पार्टी ने देर रात तक भक्ति संगीत की प्रस्तुतियां देकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। मधुर भजनों की प्रस्तुति के दौरान श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूमते नजर आए। जयकारों से गूंजा परिसर रात्रि जागरण के दौरान लोक देवी-देवताओं और श्री खेतेश्वर दाता के जयकारों से आयोजन स्थल गूंज उठा। श्रद्धालुओं ने देर रात तक भजनों का श्रवण किया और गुरु महाराज की आराधना करते हुए परिवार की सुख-समृद्धि एवं मंगल की कामना की।

राजस्थानी परंपरा से हुआ सम्मान कार्यक्रम में श्री मदुरै राजस्थानी सेवा समाज के गणमान्य लोगों ने भी शिरकत की। इस दौरान राजपुरोहित समाज के गणमान्यजनों का राजस्थानी परंपरा के अनुसार साफा एवं माला पहनाकर सम्मान किया गया। अतिथियों ने आयोजन के लिए समाजजनों को शुभकामनाएं दीं। आयोजन स्थल पर श्रद्धालुओं की सुविधा और कार्यक्रम को व्यवस्थित ढंग से सम्पन्न कराने के लिए आयोजकों की ओर से आवश्यक व्यवस्थाएं की गई थीं।

धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक एकता का संदेश

खेतेश्वर दाता के नाम आयोजित इस भजन संध्या एवं रात्रि जागरण ने धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक एकता और सांस्कृतिक जुड़ाव का संदेश दिया। विभिन्न समाजों के लोगों की सहभागिता ने आयोजन को व्यापक स्वरूप प्रदान किया। मदुरै में बसे प्रवासी समाज के बीच ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन परंपराओं को जीवंत रखने के साथ सामाजिक समरसता को भी मजबूत करते हैं।

समाचार प्रेषकः दिनेश सालेचा, मदुरै।

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at "Maruthi"Plaza"", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130 , RNI No. KNHIN/2026/A5540. E-Mail: news@bhaarataarth.com, Website: bhaarataarth.com, Established: 2026